Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-42
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 10 जनवरी से 16 जनवरी 2018 तक
माघ कृष्ण नवमी से माघ कृष्ण अमावस्या 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

अमेरिकी धौंस का... पृष्ठ- 3

डायबिटीज टर्मिनेटर... पृष्ठ- 4

भगवान शंकर के अंशा.... पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

इंसानियत के बीच.... पृष्ठ- 12

शुभकामना संदेश

सम्मानित देशवासियों व पाठकों, सादर जय हिन्दू राष्ट्र आपको एवं आपके परिवार तथा बंधु–बंधवों को मकर संक्रांति, लोहड़ी एवं पोंगल की हार्दिक शुभकांमनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

ब्रह्मपुत्र नदी का पानी नाले की तरह हुआ गंदा, चीन ने दी सफाई

भारत सरकार करे तीव्र विरोध–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

ब्रह्मपुत्र नदी के पानी की क्वालिटी अचानक से खराब होने और उसका रंग काला पड़ने पर उठ रहे सवाल पर चीन की सफाई आई है। चीन ने कहा कि तिब्बत में नवंबर के मध्य में आये ६.६ वेग वाले भूकंप ने ब्रह्मपुत्र के पानी को गंदा कर दिया है। इसने भारत में चिंता पैदा कर दी थी। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता हुआ चुनयिंग ने कहा कि हालिया परीक्षणों ने दशार्या कि पानी की गुणवत्ता तृतीय श्रेणी के स्तर पर पहुंच गई है, तृतीय श्रेणी का पानी मछली पालन और वन्यजीवन के लिये ठीक माना शेष पृष्ठ 11 पर

पाकिस्तान ने भारतीय राजनयिक को किया तलब, सेना के एलओसी पार करने के दावे को नकारा

पाकिस्तान स्थित सभी आंतकी प्रशिक्षण शिविर नष्ट किये जाये–हिन्दू महसभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान ने भारतीय सेना पर अकारण गोलीबारी का आरोप लगाते हुए इस पर विरोध दर्ज कराने के लिए भारत के कार्यवाहक उप उच्चायुक्त को सम्मन किया और उन दावों को सिरे से खारिज कर दिया कि भारतीय कमांडो ने नियंत्रण रेखा पार कर एक साहसी अभियान को अंजाम दिया। विदेश विभाग ने कहा भारत की ओर से नियंत्रण रेखा पार कर कार्रवाई किए जाने के फर्जी दावा हैं और यह नियंत्रण रेखा पर शांति एवं सौहार्द के लिए प्रतिकूल असर डालने वाले हैं। बयान में कहा गया है कि महानिदेशक दक्षिण एशिया एवं दक्षेस मोहम्मद फैसल ने भारत के कार्यवाहक उप उच्चायुक्त को सम्मन किया और रखचिकरी सेक्टर में भारतीय सुरक्षा बलों की ओर से किए गए संघर्ष विराम के कारण उल्लंघन की निंदा की। भारतीय सेना के पांच कमांडो के एक दल ने जम्मू कश्मीर के पुंछ सेक्टर में नियंत्र्ण रेखा को पार करते हुए एक त्वरित एवं साहसिक ऑपरेशन में तीन पाकिस्तानी सैनिकों को ढेर कर दिया। रावलाकोट के रुख चाकरी सेक्टर में अंजाम दिए गए रणनीतिक हमला ने पिछले साल के लक्षित हमले सर्जिकल स्ट्राइक की यादें ताजा कर दीं। पाकिस्तानी सेन्ना ने रजौरी के केरी सेक्टर में संघर्ष विराम का उल्लंघन करते हुए गोलीबारी की थी जिसमें एक मेजर सहित चार भारतीय सैनिक शहीद हो गए थे। सेना के इस ऑपरेशन को उस घटना के बदले के तौर पर देखा शेष पृष्ठ 11 पर

शत्रु हरता, मां बगलामुखी

माता बगलामुखी दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं। इन्हें माता पीताम्बरा भी कहते हैं। ये स्तम्भन की देवी हैं। सारे ब्रह्माण्ड की शक्ति मिल कर भी इनका मुकाबला नहीं कर सकती

मां बगलामुखी कथा : मां देवी बगलामुखी के संदर्भ में एक कथा बहुत प्रचलित है जिसके अनुसार एक बार सतयुग में महाविनाश उत्पन्न करने वाला ब्रह्मांडीय तूफान उत्पन्न हुआ, जिससे संपूर्ण विश्व नष्ट होने लगा इससे चारों ओर हाहाकार मच जाता है और अनेकों लोक संकट में पड़ गए और संसार की रक्षा करना असंभव हो गया। यह तूफान सब कुछ नष्ट भ्रष्ट करता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था, जिसे देख कर भगवान विष्णु जी चिंतित हो गए इस समस्या का कोई हल न पा कर वह भगवान शिव को स्मरण करने लगे तब भगवान शिव उनसे कहते हैं कि शक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई इस विनाश को रोक नहीं सकता अतः आप उनकी शरण में जाएँ, तब भगवान विष्णु ने हरिद्रा सरोवर के निकट पहुँच कर कठोर तप करते हैं. भगवान विष्णु ने तप करके महात्रिपुरसुंदरी को प्रसन्न किया देवी शक्ति उनकी साधना से प्रसन्न हुई और सौराष्ट्र क्षेत्र की हरिद्रा झील में जलक्रीडा करती महापीत देवी के हृदय से दिव्य तेज उत्पन्न हुआ। उस समय चतुर्दशी की रात्रि को देवी बगलामुखी के रूप में प्रकट हुई, तीलोग स्तम्भिनी महाविद्या भगवती बगलामुखी नें प्रसन्न हो कर विष्णु जी को इच्छित वर दिया और तब सृष्टि का विनाश रूक सका। देवी बगलामुखी को बीर रति भी कहा जाता है क्योंकि देवी स्वम ब्रह्मास्त्र रूपिणी हैं, इनके शिव को एकवक्त्र महारुद्र कहा जाता है इसी लिए देवी सिद्ध विद्या हैं। तांत्रिक इन्हें स्तंभन की देवी मानते हैं, गृहस्थों के लिए देवी समस्त प्रकार के संशयों का शमन करने वाली हैं।

इन बातों का रखें विशेष ध्यान : आराधना में निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना जरूरी होता है। साधना में पीत वस्त्र धारण करना चाहिए एवं पीत (पीले रंग के वस्त्र) वस्त्र का ही आसन लेना चाहिए। आराधना में पूजा की सभी वस्तुएं पीले रंग की होनी चाहिए। आराधना खुले आकश के नीचे नहीं करनी चाहिए। आराधना काल में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। साधना डरपोक किस्म के लोगों को नहीं करनी चाहिए। बगलामुखी देवी अपने साधक की परीक्षा भी लेती हैं। साधना काल में भयानक अवाजें या आभास हो सकते हैं, इससे घबराना नहीं चाहिए और अपनी साधना जारी रखनी चाहिए।

शत्रु हरता : इनकी उपासना से शत्रुओं का स्तम्भन होता है तथा जातक का जीवन निष्कंटक हो जाता है। किसी छोटे कार्य के लिए १०,००० तथा असाध्य से लगाने वाले कार्य के लिए एक लाख मंत्र का जाप करना चाहिए। बगलामुखी मंत्र के जाप से पूर्व बगलामुखी कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए। व्यष्ठि रूप में शत्रुओ को नष्ट करने की इच्छा रखने वाली तथा समिष्टि रूप में परमात्मा की संहार शक्ति ही बगला है। पिताम्बरा विद्या के नाम विख्यात बगलामुखी की साधना प्रायः शत्रुभय से मुक्ति और वाकसिद्धि के लिये की जाती है। इनकी उपासना में हल्दी की माला पीले फूल और पीले वस्त्रो का विधान है।

मां का रूप : माहविद्याओ में इनका स्थान आठवाँ है। द्वी भुज चित्रण ज्यादा आम है और सौम्या या मामूली फार्म के रूप में वर्णित है। वह उसके दाहिने हाथ में एक गदा जिसके साथ वह एक राक्षस धड़क रहा है, जबकि उसके बाएं हाथ के साथ अपनी जीभ बाहर खींच रखती है। इस छवि को कभी कभी अचेत करने के लिए शक्ति या चुप्पी में एक दुश्मन को पंगु बना एक प्रदर्शनी के रूप में व्याख्या की है। बगलामुखी, पीताम्बर या ब्रह्मास्त्र रुपणी भी कहा जाता है

शक्ति पीठ : मध्यप्रदेश में तीन मुखों वाली त्रिशक्ति माता बगलामुखी का यह मंदिर शाजापुर तहसील नलखेड़ा में लखुंदर नदी के किनारे स्थित है। द्वापर युगीन यह मंदिर अत्यंत चमत्कारिक है। यहाँ देशभर से शैव और शाक्त मार्गी साधु–संत तांत्रिक अनुष्ठान के लिए आते रहते हैं। वही हिमाचल के कांगडा जिले के बनखंडी तथा झांसी के पास दतिया में भी मां बगलामुखी शक्ति पीठ है। इस मंदिर में माता बगलामुखी के अतिरिक्त माता लक्ष्मी, कृष्ण, हनुमान, भैरव तथा सरस्वती भी विराजमान हैं। इस मंदिर की स्थापना महाभारत में विजय पाने के पाडंवों द्वारा भगवान श्रीकृष्ण ने करवाई थी।

ललित मैनी

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह पुराने मित्रों से भेंट होगी। कार्य व व्यापार में अवसर प्राप्त होंगे। किसी मित्र के सहयोग से नई योजनायें बनेगी। जिनमें सफलता प्राप्त होगी। दशम स्थान में राहु रहने से किसी से ऋण न लें अन्यथा मुसीबत में फंस जायेंगे।

वृष - आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होंगे। सन्तान की प्रगति में बाधा आ सकती है। क्रोध बहुत आयेगा और चिडचिड़ापन भी पैदा हो सकता है। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति का लाभ मिलेगा।

मिथुन - पिछले महीने किये गये कार्यों से नये अवसर प्राप्त होंगे। आप जो कुछ भी करेंगे इस समय आपको लाभ ही लाभ होगा। सर्दी जुकाम जैसे रोगों से सावधान रहना होगा।

कर्क - आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पड़ोसियों से सावधान रहें अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। कोई रूका हुआ कार्य इस समय पूर्ण होगा।

सिंह - इस सप्ताह नये कार्य नहीं करने चाहिए क्योंकि श्रम अधिक करना पड़ेगा और उसके मुकाबले लाभ कम मिलेगा। परिवार में पिता या बुजुर्ग के स्वास्थ्य में समस्या आ सकती है। स्वास्थ्य में कुछ गिरावट आयेगी। गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से शत्रु भी उत्पन्न होंगे।

कन्या - अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें क्योंकि वो व्यवहार के सामंजस्य को बिगाड़ सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। कुछ लोगों के दाम्पत्य जीवन में किसी नन्हें मेहमान के आगमन का योग बन रहा है। भाग्य एक तरफ आपके आय में बढोत्तरी करेगा।

तुला - इस सप्ताह स्वास्थ्य के प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आय की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। धर्म व कर्म पर खर्च होगा। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर परेशानी व चिन्ता बढेगी।

वृश्चिक - इस सप्ताह किसी मित्र या रिश्तेदार से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभ होगा। आप–अपनी योजनाओं के प्रति गोपनीयता बनायें रखें। किसी दूसरें के प्रति अतिविश्वास हानिकरक साबित हो सकता है।

धनु - आपको किसी भी नये कार्यों में रूकावट पैदा हो सकती है। अतः आप इस समय नये कार्य को शुरू न करें। आर्थिक उन्नति हेतु किये कये कार्यों में सफलता मिलेगी। परिवार में वैचारिक मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार के बुजुर्गों के स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

मकर - इस सप्ताह कुछ लोगों को मान–प्रतिष्ठा का लाभ मिलने की सम्भावना है। नये व्यापार में कोई रिस्क न उठायें। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। किसी मित्र या रिश्तेदार के आने से खुशी का माहौल रहेगा लेकिन परिवार के कुछ लोग परेशान रहेंगे।

कुम्भ - परिवार की तरफ से कोई शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। भाइयों का सुख व सहयोग प्राप्त होगा। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आप अपने किसी नजदीकी सहयोगी के द्वारा परेशानी में पड़ सकते हैं। इस समय आपको कुछ यात्रायें भी करनी पड़ सकती हैं।

मीन - दांपत्य जीवन में प्रेम बढ़ेगा और सन्तान के आगमन से घर में खुशी का माहौल बनेगा। रिश्तेदारों से इस समय दूरी ही बनाये रखना आपके लिए लाभदायक होगा। यह समय आपके लिए उन्नति कारक ही सिद्ध होगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।।

हे अर्जुन! रजोगुण और तमोगुण को दबाकर सत्त्वगुण, सत्त्वगुण और तमोगुण को दबाकर रजोगुण, वैसे ही सत्त्वगुण और रजोगुण को दबाकर तमोगुण होता है अर्थात् बढ़ता है।।१०।।

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।।

जिस समय इस देह में तथा अन्तःकरण और इन्द्रियों में चेतनता और विवेकशक्ति उत्पन्न होती है, उस समय ऐसा जानना चाहिये कि सत्त्वगुण बढ़ा है।।११।।

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।।

हे अर्जुन! रजोगुण के बढ़ने पर लोभ, प्रवृत्ति, स्वार्थबुद्धि से कर्मोंका सकामभाव से आरम्भ, अशान्ति और विषयभोगों की लालसा– ये सब उत्पन्न होते है।।१२।।

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन।।

हे अर्जुन! तमोगुण के बढ़ने पर अन्तःकरण और इन्द्रियों में अप्रकाश, कर्तव्य–कर्मो में अप्रवृत्ति और प्रमाद अर्थात् व्यर्थ चेष्टा और निद्रादि अन्तःकरण की मोहिनी वृत्तियाँ–ये सब ही उत्पन्न होते हैं।।१३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 10 जनवरी से 16 जनवरी 2018 तक

अध्यक्षीय

अमेरिकी धौंस का नहीं पड़ा कोई असर

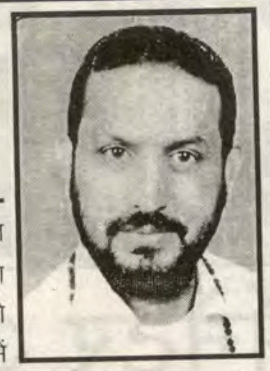

येरूशलम को इजरायल की राजधानी घोषित करने के अमरीकी फैसले को संयुक्त राष्ट्र संघ ने नकार दिया है। येरूशलम को इजरायल की राजधानी मानने के फैसले को रद्द करने के प्रस्ताव पर संरा महासभा में मतदान हुआ। जिसमें भारत समेत १२८ देशों ने इस प्रस्ताव के पक्ष में अपना मत दिया, जबकि केवल ६ वोट इसके खिलाफ पड़े। यानी ये ६ देश अमरीका के समर्थन में थे। ३५ देशों ने मतदान में हिस्सा ही नहीं लिया। संरा में हुए इस मतदान से फिलीस्तीन–इजरायल संघर्ष में दुनिया का झुकाव फिलीस्तीन की ओर नजर आया है, उसके अलावा तीन और बातें उभर कर सामने आई हैं। पहली दुनिया पर अमरीकी धौंस को अधिकतर देशों ने नकार दिया है। दूसरी संयुक्त राष्ट्र की महत्ता पुनर्स्थापित हुई। तीसरी भारत में नेहरूयुगीन विदेश नीति की प्रासंगिकता फिर स्पष्ट हुई। येरूशलम इस्लाम, ईसाई और यहूदी तीनों धर्मो का उद्गम स्थल है और इस नाते विश्व की बड़ी आबादी के लिए काफी महत्व का शहर है। १९४७ में संयुक्त राष्ट्र ने येरूशलम को अलग से अंतरराष्ट्रीय नगर का दर्जा दिया था और इसके प्रशासन पर अंतरराष्ट्रीय देखरेख का फैसला किया था लेकिन १९४८ में स्वतंत्र इजरायल के अस्तित्व में आते ही अरब इजरायल युद्ध हुआ। १९४९ में युद्ध समाप्त होने पर आर्मिटाइस सीमा खींची गई, जिसे ग्रीन लाइन भी कहा जाता है, क्योंकि यह हरे रंग की स्याही से नक्शे पर खींची गई थी। आर्मिटाइस सीमा से शहर का पश्चिमी हिस्सा इजरायल और पूर्वी हिस्सा जार्डन के हिस्से में आया लेकिन १९६७ के तीसरे अरब–इजरायल युद्ध में इजरायल ने येरूशलम के पूर्वी हिस्से को भी जीत लिया। १९८० में इजरायल ने इसे अपनी राजधानी घोषित किया तो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने प्रस्ताव पारित कर पूर्वी येरूशलम पर इजरायल के कब्जे की निंदा की और इसे अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया। २२ साल पहले १९९५ में यू एस कांग्रेस ने येरूशलम को फिर इजरायल की राजधानी घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया, लेकिन तब से लेकर अब तक तमाम राष्ट्रपति इसके कूटनीतिक परिणामों को समझते हुए, इसे अमल में लाने से कतराते रहे। सत्ता के मद में चूर डोनाल्ड ट्रंप ने शायद सोचा हो कि जो काम मेरे पूर्ववर्ती न कर पाए, उसे मैं कर दूंगा तो दुनिया में मेरी धाक बढ़ जाएगी। उन्होंने तो मतदान के पहले बाकायदा धमकी भी दे दी कि अगर अमेरिका के खिलाफ वोट किया तो आर्थिक मदद रोक दी जाएगी। लेकिन उनकी यह धौंसपट्टी बेकार हो गई। माना कि दुनिया भर के देशों में अमेरिका की आर्थिक और सामरिक घुसपैठ है, लेकिन इसका ये मतलब तो कतई नहीं कि सब अपनी स्वायत्तता उसके दरवाजे पर गिरवी रख दें। भारत भी बीते कुछ समय से अमेरिका का दोस्त देश बन गया है और इज़रायल से भी वह सामरिक सौदे सबसे ज्यादा करता है। कुछ समय पहले इजरायल की यात्रा पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गए थे और वहां काफी दोस्ताना अंदाज में नजर भी आए। भाजपा सरकार हमेशा नेहरूवादी नीतियों और आदर्शों की मुखालफत करती है, लेकिन अमेरिका और इजरायल के खिलाफ जाकर फिलीस्तीन के समर्थन में वोट डालने का उसका निर्णय सही है और इस बात को साबित करता है कि नेहरू जी द्वारा अपनाई गई दशकों पुरानी विदेश नीति ही आज भी भारत के लिए प्रासंगिक है और हमेशा रहेगी। अमेरिका और इजरायल से आर्थिकऔर सामरिक संबंधों के बावजूद भारत अरब देशों की उपेक्षा नहीं कर सकता। उसकी अपनी लोकतांत्रिक, उदारवादी पहचान के लिए भी यह जरूरी है। रहा सवाल इजरायल और अमेरिका से भावी रिश्तों का, तो उस पर फिलहाल कोई खतरा नहीं दिख रहा है। संरा में अमरीकी राजदूत निकी हेली ने इजरायल का समर्थन किया वे भारतीय मूल की हैं और इसका अच्छा असर इजरायल पर पड़ा। उधर नए साल के मौके पर भारत स्थित अमरीकी दूतावास ने ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे, इस गीत को ट्वीट कर भारत को बधाई दी है, जिससे जाहिर होता है कि अमेरिका भी भारत की दोस्ती का तलबगार है।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

देशी उद्योंगों को मिले बढ़ावा, तभी बनेगी बात

डब्लूटीओ के बनने के पहले हर देश की अपनी पेटेंट व्यवस्था थी। पेटेंट कानून में बौद्धिक सम्पदा का संरक्षण किया जाता है। किसी व्यक्ति द्वारा आविष्कार की गई वस्तु का दूसरा व्यक्ति द्वारा डुप्लीकेट बनाने पर पेटेंट कानून में रोक रहती है। डब्लूटीओ के बनने के बाद हमारे पेटेंट कानून को बदल कर वैश्विक नियमों के अनुसार बनाया गया। पूर्व में हमें छूट थी कि दूसरे द्वारा किए गए आविष्कार का हम डुप्लीकेट बना सकते थे यदि हम किसी दूसरी उत्पादन प्रक्रिया से उसी माल को बनाए। डब्लूटीओ के बाद यह छूट समाप्त हो गई है। इसलिए डब्लूटीओ हमारे लिए हानिप्रद रहा है। विश्व व्यापार संगठन डब्लूटीओ का गठन हुआ था, उस समय भारत में डब्लूटीओ का भारी विरोध हुआ था। विशेषकर लेट पार्टियों एवं स्वदेशी जागरण मंच द्वारा। तमाम विद्वानों का आकलन था कि डब्लूटीओ से जुड़ने पर हमारे उद्योगों का सफाया हो जाएगा और हम आर्थिक दासता के नए दलदल में फंस जाएंगे। ये भय सही सिद्ध हुए हैं। बीते २० सालों में भारत की यूपीए तथा एनडीए सरकारों ने डब्लूटीओ की छत्रछाया तले ग्लोबलाइजेशन को पुरजोर बढ़ाया है। लेकिन ग्लोबलाइजेशन से न हमें और न ही दुनिया के दूसरे लोगों को वांछित लाभ मिले हैं। अब इससे वापसी हो रही है। प्रमाण डब्लूटीओ की हाल में सम्पन्न हुई मंत्री–स्तरीय सभा का फुस्स होना है। वर्तमान सभा को समझने के लिए हमें कुछ पीछे जाना होगा। डब्लूटीओ के अंतर्गत दूसरी प्रमुख व्यवस्था उच्चतम आयात करो के निर्धारण की है। पूर्व में हर देश अपनी मर्जी के अनुसार किसी भी वस्तु पर मनचाही दर से आयात कर वसूल सकता था। जैसे हम आयातित कारों पर २०० प्रतिशत तक वसूल करते थे। डब्लूटीओ के अंतर्गत आयात करों की अधिकतम सीमा निर्धारित कर दी गई। इससे अपने देश में चीन का माल भारी मात्रा में प्रवेश करने लगा है और घरेलू उद्यमियों को नुकसान हुआ। डब्लूटीओ के इन नुकसानदेह प्रभावों का परिणाम है कि सब दुनिया के देश डब्लूटीओ का और विस्तार नहीं करना चाहते हैं। इस समय डब्लूटीओ के विस्तार की कई संभावनाएं थीं। वर्तमान में डब्लूटीओ के दायरे में माल का व्यापार आता है जैसे गेहूं, कार तथा मशीनों का। सेवाओं का व्यापार डब्लूटीओ के बाहर है जैसे साफ्टवेयर, ट्रान्सलेशन, मेडिकल ट्रान्सक्रिप्शन, हेल्थ टूरिज्म इत्यादि। डब्लूटीओ के विस्तार की दूसरी संभावना ई–कामर्स की जैसे आज आप चीन की किसी कंपनी को आनलाइन आर्डर देकर माल मंगवा सकते हैं। इस व्यापार को सुनियोजित करने के लिए कोई वैश्विक कानून नहीं है। हाल में हुई डब्लूटीओ की मंत्री स्तरीय वार्ता में इन विषयों पर चर्चा नहीं हुई जो कि बताता है कि दुनिया के लोग डब्लूटीओ से परेशान हो गए हैं और अब वैश्वीकरण से पीछे हट रहे हैं। वैश्वीकरण का विस्तार तथा इससे पीछे हटना इतिहास में बार–बार होता रहा है। अपने ही ४०० वर्ष पुराने इतिहास का स्मरण करें। भारत पर मुगलों का शासन था। अरब सागर के दस्युओं द्वारा हमारे जहाजों को लूटा जा रहा था। ऐसे में ब्रिटिश व्यापारियों ने मुगल शासकों को प्रस्ताव दिया कि यदि उन्हें भारत में खुलकर व्यापार करने की छूट दी जाए तो शुल्क के रूप में वे भारतीय जहाजों को समुद्री सुरक्षा उपलब्ध करा देंगे। ब्रिटिश व्यापारियों की नाविक सेना हमारी तुलना में ताकतवर थी और वे दस्युओं के सामने झुकते नहीं थे। हमारे मुगल शासकों ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। बस भारत का ग्लोबलाइजेशन हो गया। ब्रिटिश व्यापारियों ने अपने पैर पसारे। समय क्रम में हमारे तमाम राजाओं ने स्वेच्छा से ब्रिटिश लोगों को अपनी संप्रभुता दे दी। उन्होंने आकलन किया कि ब्रिटिश शासन के नीचे द्वितीय स्तर पर भागीदार बने रहना उनके लिए लाभदायक रहेगा। कमोबेश देश की जनता ने भी ब्रिटिश शासकों का स्वागत किया। आज डब्लूटीओ द्वारा ग्लोबलाइजेशन उसी प्रकार लागू किया जा रहा है जैसे ब्रिटिश शासकों द्वारा भारत में लागू किया गया था। ब्रिटिश माल को भारत में न्यून आयात कर पर प्रवेश करने की छूट दी गई थी जैसा कि वर्तमान में डब्लूटीओ के अन्तर्गत चीन के माल को भारत में न्यून आयातकर पर प्रवेश करने की छूट है। ब्रिटिश कंपनियों ने भारत में निवेश किया जैसा कि आज बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किया जा रहा है। भारत के घरेलू कानूनों को ब्रिटिश कानूनों के अनुसार बदला गया जैसे आज हमने अपने पेटेन्ट कानून के बदले डब्लूटीओ के अनुरूप बदल दिया है। समय क्रम में भारतीयों ने पाया कि उनके द्वारा स्वेच्छा से ब्रिटिश शासकों को हस्तान्तरित की गई स्वतंत्रा का प्रभाव विपरीत पड़ रहा है। तब देश ने लाजपत राय और महात्मा गांधी के नेतृत्व में उस ग्लोबलाइजेशन को चुनौती दी। पूरे देश में स्वतंत्रा का आन्दोलन छिड़ गया। हमारे राजाओं द्वारा ब्रिटिश शासकों के साथ की गई संधियों का कोई अर्थ नहीं रह गया। अंत में भारत ग्लोबलाइजेशन के फंदे से बाहर निकला जिसे हमारे शासकों ने स्वेच्छा से अपने गले में हीरे का हार समझ कर डाल लिया था। इसी प्रकार की ग्लोबलाइजेशन से वापसी आज डब्लूटीओ की मंत्रि स्तरीय सभा में दिखती है। ग्लोबलाइजेशन तब टिकेगा जब किसी देश के लोगों को यह लाभप्रद दिखेगा। जैसे–जैसे जनता को यह वास्तविकता समझ में आएगी हमारे नेताओं को ग्लोबलाइजेशन से पीछे हटना ही होगा। इसी क्रम में हमें मेक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों की विफलता को शीघ्र स्वीकार कर अपने घरेलू उद्यमियों को बढ़ावा देना चाहिए।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

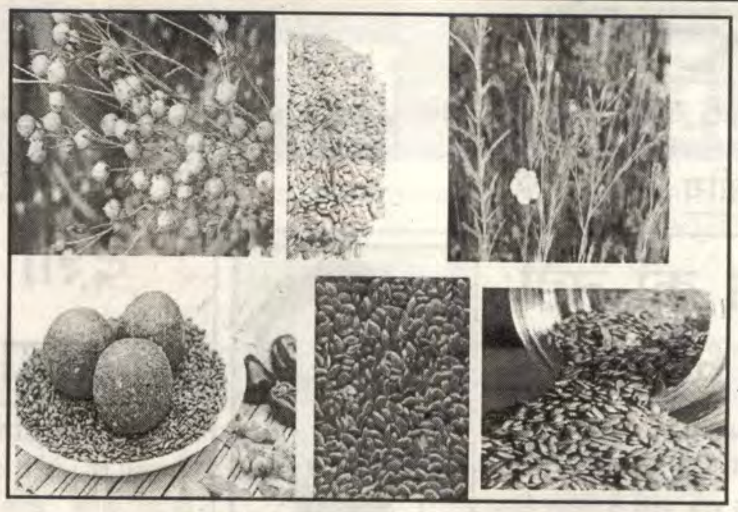

डायबिटीज टर्मिनेटर अलसी

डॉ० ओ०पी०वर्मा

डायबिटीज या मधुमेह क्या है?

डायबिटीज या मधुमेह चयापचय संबंधी रोग है जिसमें रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है, क्योंकि या तो शरीर में रक्त–शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने वाले इंसुलिन नामक हार्मोन का निर्माण बहुत कम होता है या इंसुलिन अपने कार्य को ठीक से नहीं कर पाता है।

ग्लूकोज का सूत्र C_6, H_{12}, O_6 है। इसमें ६ कार्बन के परमाणुओं का एक षट्कोणीय छल्ला होता है जिनसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के परमाणु जुड़े रहते हैं। इसमें सूर्य की असीम ऊर्जा संरक्षित रहती है। यह हमारे शरीर का ईंधन है जो शरीर की हर कोशिका तक पहुँचता है और कोशिका में ऑक्सीजन से क्रिया कर कार्बन–डाई–ऑक्साइड, पानी तथा ऊर्जा का निर्माण करता है। यदि पर्याप्त इंसुलिन उपलब्ध न हो या इंसुलिन अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पाये, जैसा कि डायबिटीज में होता है, तो ग्लूकोज नामक ईंधन कोशिकाओं में प्रवेश नहीं कर पाता है और खून में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ने लगती है। कोशिकाएँ ऊर्जाहीन तथा कमजोर पड़ने लगती हैं और वसा के उपापचय से ऊर्जा ग्रहण करती हैं। खून में बढ़े ग्लूकोज के अणु बेपरवाह होकर शरीर में दहशतगर्दी करने निकल पड़ते हैं और शरीर में उत्पात मचाते रहते हैं। इनकी शरारतों से शरीर के कोमल अंगों को धीरे–धीरे नुकसान पहुँचने लगता है, इसलिए वे ग्लूकोज की शिकायत गुर्दों को भेजते हैं। गुर्दे स्थिति का अवलोकन करते हैं और ग्लूकोज को दण्ड देने के बारे में विचार करते हैं। उधर रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़ती जाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जब रक्त में ग्लूकोज की मात्रा एक निश्चित सीमा को छू लेती है, तब गुर्दों के सब्र का बाँध टूट जाता है और वे ग्लूकोज को दंड के रूप में मूत्र के साथ शरीर से विसर्जन करना शुरू कर देते हैं। इन्हीं कारणों से चिकित्सा–शास्त्री डायबिटीज के रोगी को आहार प्रबंधन औषधियों और इंसुलिन की मदद से रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को सामान्य रखने की सलाह देते हैं।

ग्लूकोज के अणु हमारे दुश्मनों जैसे जीवाणु, विषाणु, परजीवियों, मुक्त–कणों, कैंसर आदि से बहुत जल्दी घुल–मिल जाते हैं, मित्रता कर लेते हैं, उनको पोषण और ऊर्जा देते हैं।

डायबिटीज पर अलसी के चमत्कार जीरो '०' कार्ब भोजन है अलसी

अलसी ब्लड शुगर नियंत्रित रखती है, डायबिटीज के शरीर पर होने वाले दुष्प्रभावों को कम करती है। डायबिटीज के रोगियों के लिए अलसी एक आदर्श और अमृत तुल्य भोजन है, क्योंकि यह जीरो '०' कार्ब भोजन है। चौंकियेगा नहीं, यह सत्य है। मैं आपको समझाता हूँ। १४ ग्राम अलसी में २.५६ ग्राम प्रोटीन, ५.६० ग्राम फैट, ०.६७ ग्राम पानी और ०.५३ ग्राम राख होती है। १४ में से उपरोक्त सभी के जोड़ को घटाने पर जो शेष (१४–०.६७ + २.५६ + ५.६० +०.५३) = ४.०४ ग्राम) ४.०४ ग्राम बचेगा वह कार्बोहाइड्रेट की मात्रा हुई। विदित रहे कि फाइबर कार्बोहाइड्रेट की श्रेणी में ही आते हैं। इस ४.०४ कार्बोहाइड्रेट में ३.८० ग्राम फाइबर होता है जो न रक्त में अवशोषित होता है और न ही रक्तशर्करा को प्रभावित करता है। अतः १४ ग्राम अलसी में कार्बोहाइड्रेट की व्यावहारिक मात्रा तो ४.०४–३.८० = ०.२४ ग्राम ही हुई, जो १४ ग्राम के सामने नगण्य मात्रा है इसलिए आहार शास्त्री अलसी को जीरो कार्ब भोजन मानते हैं।

हृदय के लिए हितकारी है अलसी

अलसी हमारे रक्तचाप को संतुलित रखती है। अलसी हमारे रक्त में अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL Cholesterol) की मात्रा को बढ़ाती है और ट्राइग्लीसराइड्स व खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL Cho-lesterol) की मात्रा को कम करती है। अलसी रक्त को पतला रखती है और दिल की धमनियों में खून के थक्के (एथेरोस्क्लिरोसिस रोग) नहीं बनने देती और इस तरह हृदयाघात से बचाव करती है। हृदय की गति को नियंत्रित कर वेन्ट्रीकुलर एरिथिया से होने वाली मृत्यु की दर को कम करती है। प्रदाहरोधी है अलसी

डायबिटीज में कोशिका स्तर पर मुख्य विकृति प्रदाह (इन्फ्लेमेशन), रक्त–वाहिकाओं और नाड़ियों का क्षतिग्रस्त होना और इन्हीं के कारण शरीर में विभिन्न जटिलताएँ पैदा हो जाती हैं। डायबिटीज में अलसी हमारे शरीर में ओमेगा–३ और ओमेगा–६ का अनुपात संतुलित रखती है, जिसके फलस्वरूप कोशिका में एक और तीन प्रदाहरोधी रक्तवाहिका विस्तारक और बिंबाणुरोधी प्रोगस्टाग्लैन्डिन E-1 तथा E-3 ल्युकोट्राइन्स (TXA-2) ए थ्रोम्ब्रोक्सेन्स (TLB-4) बनते हैं। अलसी में लिगनेन होता है जो रक्त शर्करा को नियंत्रण में रखता है तथा एक शक्तिशाली प्रदाहरोधी और प्रतिऑक्सीकारक है। इसलिए अलसी सेवन करने वाले रोगी में डायबिटीज की जटिलताओं के होने की संभावना कम रहती है यह बहुत बड़ी बात है।

लैंगिक विचार का उपचार है अलसी

डायबिटीज का एक बहुत अहम कुप्रभाव स्तंभनदोष, दुर्बल कामेच्छा, शीघ्रस्खलन, बांझपन, शुष्क योनि, गर्भपात आदि भी है। आज यह जटिलता और भी महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि आजकल डायबिटीज बहुत कम उम्र में होने लगी है। अलसी इस जटिलता को भी पूरी तरह ठीक करने में सक्षम है।

फाइबर से भरपूर है अलसी

अलसी में २७ प्रतिशत रेशा (फाइबर) होता है। अलसी में विद्यमान फाइबर आँतों में शर्करा को बाँध कर रखता है और धीरे–धीरे रक्त में छोड़ता है जिससे रक्त–शर्करा का स्तर ज्यादा उछाल नहीं मारता है, अग्न्याशय को रक्त में कम इंसुलिन छोड़ना पड़ता है, इंसुलिन प्रतिशोध कम होता है, लंबे समय तक पेट भरा रहता है और खाने की ललक कम होती है।

पैर की रक्षक है अलसी

डायबिटीज के कारण पैरों में रक्त का संचार कम हो जाता है व पैरों में ऐसे घाव हो जाते हैं जो आसानी से ठीक नहीं होते। इससे कई बार गेंग्रीन बन जाती है और इलाज हेतु पैर कटवाना पड़ जाता है। इसीलिए डायबिटीज पीड़ितों को चेहरे से ज्यादा अपने पैरों की देखभाल करने की सलाह दी जाती है। पैरों की नियमित देखभाल, अलसी खाने से पैरों में रक्त का प्रवाह बढ़ता है, पैर के घाव व फोड़े आदि ठीक होते हैं। पैर व नाखून नरम, मुलायम व सुन्दर हो जाते हैं।

आँखों के लिए अलसी

डायबिटीज के दुष्प्रभावों के कारण आँखों के दृष्टि पटल की रक्त वाहिनियों में कहीं–कहीं हल्का रक्तस्राव और रुई जैसे सफेद धब्बे बन जाते हैं, इसे रेटीनोपैथी कहते हैं जिसके कारण आँखों की ज्योति धीरे–धीरे कम होने लगती है। दृष्टि में धुंधलापन आ जाता है। अंतिम अवस्था में रोगी अंधा तक हो जाता है। अलसी इसके बचाव में बहुत लाभकारी पाई गई है। डायबिटीज के रोगी को मोतियाबिन्द और काला पानी होने की संभावना भी ज्यादा रहती है। अलसी के सेवन से नजर अच्छी हो जाती है, रंग ज्यादा स्पष्ट व उजले दिखाई देने लगते हैं तथा धीरे–धीरे चश्मे का नम्बर भी कम हो सकता है।

गुर्दों की रक्षक है अलसी

डायबिटीज का बुरा असर गुर्दों पर भी पड़ता है। गुर्दों में डायबिटीज नेफ्रोपैथी नामक रोग हो जाता है, जिसकी आरंभिक अवस्था में प्रोटीनयुक्त मूत्र आने लगता है, बाद में गुर्दे कमजोर होने लगते हैं और अंत में गुर्दे नाकाम हो जाते हैं। फिर जीने के लिए डायलेसिस व गुर्दा प्रत्यारोपण के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचता। अलसी गुर्दे के उत्तकों को नई ऊर्जा देती है।

डायबिटीज में अलसी सेवन का तरीका

डायबिटीज के रोगी को ३०–५० ग्राम अलसी रोज खानी चाहिए। कोशिश करें अलसी को रोजाना मिक्सी के चटनी जार में सूखा पीसें। बहुत बारीक नहीं पीसे, दरदरी ही ठीक रहती है। लेकिन यदि रोज पीसने में परेशानी हो तो एक सप्ताह की इकट्ठी भी पीस सकते हैं। १५–२५ ग्राम अलसी सुबह और शाम आटे में मिलाकर रोटी बनाकर खाएँ। यह रोटी बहुत स्वादिष्ट लगती है। अलसी खाने का यह सबसे अच्छा तरीका है। इसमें एक तो गेहूँ का आटा कम खाने में आता है जिसका ग्लाइसीमिक इंडेक्स बहुत ज्यादा होता है। दोनों मुख्य आहार में फाइबर की पर्याप्त मात्रा पेट में जाती है और शर्करा को बांधे रखती है व धीरे–धीरे रक्त में छोड़ती है। लेकिन जो लोग अलसी की रोटी नहीं खाना चाहते हैं, वे दही, सलाद, सब्जी आदि में डालकर सुबह–शाम ले सकते हैं।

रिफाइंड कार्ब होते बड़े खराब

आपको परिष्कृत शर्करा (कार्बोहाइड्रेट) जैसे सफेद चावल, मैदा, चीनी और खुले हुए या पैकेट बंद खाद्य पदार्थ जैसे–ब्रेड, केक, पास्ता, मैगी, नूडल्स, बिस्कुट, अंकलचिप्स, कुरकुरे, पेप्सी, लिम्का, कोकाकोला, फैंटा, फ्रूटी, पिज्जा, बर्गर, पेटीज, समोसा, कचोरी, भटूरा, नमकीन सेव आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

बंद करो रिफाइंड तेल अगर चलानी हो जीवन की रेल

आपको खराब फैट जैसे परिष्कृत या रिफाइंड तेल जिसे बनाते वक्त ४०० सेल्सियस तक गरम किया जाता है व अत्यंत हानिकारक रसायन पदार्थ जैसे हैक्जेन, कास्टिक सोडा, फोस्फोरिक एसिड, ब्लीचिंग क्ले आदि–आदि मिलाये जाते हैं, इनका सेवन कतई नहीं करना है। आपको अच्छे वसा जैसे घाणी का निकला नारियल (हालांकि अमरीकी संस्था FDA ने अभी तक नारियल के तेल को सर्वश्रेष्ठ खाद्य तेल का

शेष पृष्ठ 11 पर

'स्वधर्म का विधान'

✍ रश्मि अग्रवाल

देखा जाए तो कोई भी व्यक्ति जो अपने मूल तत्व को नहीं जानता वह अपने स्वधर्म कर्म–ज्ञान से भी वंचित रहता है। मूल विस्मृति में व्यक्ति अज्ञान है और विश्व में हो रहे अथवा होने वाले गुण–दोषों का जनक होता है। मोह आवरण एवं उसमें उत्पन्न भ्रांति के ये घेरे हैं, अज्ञान धारणाएँ हैं। क्योंकि जो आया है उसे एक दिन जाना भी होगा किन्तु जो स्वधर्म निभाकर जाये वह स्थायी सुख शान्तिदायक ज्ञानी है।

जीवन की प्रत्येक अवस्था व घटना को भोग रूप में देखें तो हम मन से, शरीर से जीर्ण–क्षीण होते चले जायेंगे परन्तु यदि हम इनको मात्र गति रूप, बहते हुए विकार को दृष्टा भाव से देखें तो दुखदाई विकार स्वतः ही बह जायेंगे। इसलिए जीवन की प्रत्येक अवस्था में भोग को प्रसाद समझकर ग्रहण कराने से व्याधि से दूर रहेंगे, इच्छा को तृष्णा में न बदलने पर शान्ति होगी एवं तिमिर की कालिमा अप्रभावी बनेगी और हमारा सारा तप–ताप में परिणित नहीं होगा। जिस प्रकार आँधी का प्रभाव घर में बैठकर न्यूना–सा हो, व्यक्ति व्याकुल नहीं होता है, उसी प्रकार स्वधर्म पालन में सन्ताप भी तप में बदल जाता है तथा जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता है।

अगर समझें तो जब वृक्ष के पत्ते पतझड़ में गिर जाते हैं तो पौधे लय नहीं होते, जब तक मूल सुरक्षित पौधा भी संरक्षित है। यही कारण है कि मूल स्थिति में मृत्यु भासित नहीं होती है। जो शरीर जैसे कर्म करेगा उसको उसी कर्म के आधार पर ही नई योनि प्राप्त होगी। यदि पतन दृष्टि का व्यक्ति है तो अनुभव कराने हेतु उसको भिखारी, विकलांग, नेत्रहीन, अभावग्रस्त आदि अवस्था में जन्म लेना पड़ेगा। परन्तु स्वधर्मी व्यक्ति का जन्म उसके पिछले जन्म के स्तर से ऊँचा जन्म मिलेगा। जिस प्रकार प्रकृति में आम के वृक्ष पर अमरूद नहीं उगाये जा सकते हैं उसी प्रकार एक विशिष्ट योनि जाराज की जीवात्मा जारज में ही जन्म धारण करेगी। अधर्मी व्यक्ति का जन्म ऐसे स्थान पर रहेगा' जहाँ अवरोध, असफलता, सन्ताप, दुःख आदि देकर उसके स्वरूप को शुद्ध किया जा सकता है। आज के परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि मैं कम काम करूँ और पूरा पैसा मिले, यहाँ तक की हड़ताल पर रहूँ, कई महीने तक फिर भी पूरा पैसा मिले। यह इच्छा फल आसक्ति है, परमात्मा का नियम है जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। यह भी देखने में आता है कि एक विद्यार्थी कम पढ़ता है फिर भी उसकी पास होने की इच्छा रहती है और फेल होने पर दुःख होता है। कोई व्यक्ति कम्पटीशन में बैठता है जो स्वधर्म आधार नहीं है, पुरूशार्थ करने पर भी सफल नहीं होता है। ये सारी व्यवस्थाएँ अधर्म पर आधारित हैं क्योंकि हमने अपने कर्म में भगवान की पूजा नहीं देखी है और फल की इच्छा की सफलता रूपी आसक्ति जमा ली। प्रत्येक व्यक्ति को भोग का स्वाद, भौतिक संसाधन का जमाव, वासनाओं का अनुभव सुन्दर लगता है, जो कुछ समय पश्चात् असक्ति युक्त धारा में बंधकर जीवन कष्टकारक, अशान्तिदायक हो जाता है।

इस प्रकार भगवान ने स्वधर्म करने और न करने के परिणाम बताये हैं। लोक एवं परलोक भी धर्म मार्ग पर चलकर अपने वर्तमान के जीवन में निर्माण करते हुए अगला जीवन भी सुख–समृद्धि से भरता चला जायेगा। यही स्वधर्म का विधान है जो धर्म के पालन में तुम्हारा पिता, बेटा, गुरू क्यों न हो तो उसे भी रौंद कर आगे चलते चले जाओ। ममता, मोह के कारण व्यक्ति स्वधर्म को भूल कर अपने सम्बन्धियों एवं परिवार से जुड़कर समस्त आचरण नष्ट कर देता है। लोभ और मद के कारण जहाँ है वहाँ से उठता नहीं है और लोगों को गिराने का प्रयास करता है। मैं और मेरे अहंकार में खोकर अपने स्वार्थ हितों को पूरा करने के लिए स्वधर्म भूल जाता है। व्यक्ति भय और भ्रम से ग्रसित होकर अपने मार्ग में भटक जाता है और दुष्कर्म करने को पीछे से आघात करता है। सच्चाई से भागने पर अपना मनोबल गिरा देता है और संग दोष के कारण अपना ही शत्रु बन जाता है।

वही शक्तिशाली मानव अपने स्वधर्म का पालन करके बाधाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन यापन करता है।

अनेकों व्यक्ति कुछ प्राप्त करने की लालसा लिये जीवन यात्र करते हैं और यह जानते हुए भी कि **'होगा वही जो राम रचि राखा'**। अनेक प्रकार के मोमत्व हेतु प्रयास करते हैं। कभी तांत्रिक की शरण में, कभी ज्योतिषी से विचार करके, मान्यताओं में फँसते हैं। रेशम के कीड़े की तरह जो आग से डरता है। अपने चारो ओर रेशम का खोल बनाता है और उसी रेशम के खोल में स्वच्छ वायु न पाने के कारण देह त्याग कर देता है। इस प्रकार भोग शक्ति की गति व्यक्ति को असंतुलित कर देती है और नाना प्रकार के संसाधन बनाने में अपनी बुद्धि को गवां कर जगत में फँसता जाता है। तात्पर्य ये ही है कि संसार में ऐसे विचरण करो जैसे कमल का फूल... कि कीचड़ में खिलने के पश्चात् भी. इतना स्वच्छ और निर्मल होता है कि भगवान को अर्पण किया जाता है उसी प्रकार स्वधर्म वो कुंजी है जो व्यक्ति के जीवन को सरल व कुन्दन बना देती है।

भगवान शंकर के अंशावतार थे अश्वत्थामा!

महापराक्रमी अश्वत्थामा को भगवान शिव का अवतार माना जाता है। द्वापरयुग

में जब कौरव व पांडवों में युद्ध हुआ था, तब अश्वत्थामा ने कौरवों का साथ दिया था। महाभारत के अनुसार अश्वत्थामा काल, क्रोध, यम व भगवान शंकर के सम्मिलित अंशावतार थे। अश्वत्थामा अत्यंत शूरवीर, प्रचंड क्रोधी स्वभाव के योद्धा थे। भगवान श्रीकृष्ण ने ही अश्वत्थामा को चिरकाल तक पृथ्वी पर भटकते रहने का श्राप दिया था।

मध्य प्रदेश के बुरहानपुर शहर से २० किलोमीटर दूर एक किला है। इसे असीरगढ़ का किला कहते हैं। इस किले में भगवान् शिव का एक प्राचीन मंदिर है। यहाँ के स्थानीय निवासियों का कहना है कि अश्वत्थामा प्रतिदिन इस मंदिर में भगवान् शिव की पूजा करने आते हैं। कुछ लोग तो यह दावा भी करते हैं कि उन्होंने अश्वत्थामा को देखा है, लेकिन इस दावे में कितनी सच्चाई है, इस पर संदेह है।

मान्यता है कि असीरगढ़ के किले में स्थित तालाब में स्नान करके अश्वत्थामा शिव मंदिर में पूजा–अर्चना करते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि पहाड़ की चोटी पर बने किले में स्थित यह तालाब बुरहानपुर की तपती गरमी में भी कभी सूखता नहीं। तालाब के थोड़ा आगे गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर है। मंदिर चारों तरफ से खाइयों से घिरा है।

मान्यता है कि इन्हीं खाइयों में से किसी एक में गुप्त रास्ता बना हुआ है, जो खांडव वन (खंडवा जिला) से होता हुआ सीधे इस मंदिर में निकलता है। इसी रास्ते से होते हुए अश्वत्थामा मंदिर के अंदर आते हैं। स्थानीय रहवासियों का दावा है सुबह सबसे पहले अश्वत्थामा ही इस मंदिर में आकर भगवान शिव की पूजा करते हैं।

महाभारत के प्रमुख पात्रों में से एक अश्वत्थामा थे। ये कौरवों व पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र थे। हनुमानजी आदि सात अमर लोगों में अश्वत्थामा का नाम भी आता है। इस विषय में एक श्लोक प्रचलित है–

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो
हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तएतै
चिरजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं
मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि
सर्वव्याधिविवर्जित।।

अर्थात् अश्वत्थामा, राजा बलि, व्यासजी, हनुमानजी, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम–ये सातों अमर हैं।

आचार्य द्रोण ने भगवान् शंकर की तपस्या की और उन्हें प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त किया वे उनके पुत्र के रूप में अवतार लेंगे। समय आने पर सवन्तिक रुद्र ने अपने अंश से द्रोण के बलशाली पुत्र अश्वत्थामा के रूप में अवतार लिया। द्रोणाचार्य और उनकी पत्नी कृपी के एकमात्र पुत्र अश्वत्थामा थे। धर्म ग्रंथों के अनुसार द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा इसलिए कहलाए, क्योंकि जन्म के समय अश्वत्थामा उच्चैःश्रवा घोड़े के समान इतनी जोर से चिल्लाए थे कि तीनों लोक कांप गए थे। अतः आकाशवाणी ने इसका नाम अश्वत्थामा रखा। शास्त्रों में इसका उल्लेख है–

अलभद् गौतमी
पुत्रमश्वत्थामानमेव च।
स जातमात्रौ व्यनदद्
यथैवोच्चैः श्रवाहयः।।

महाभारत आदिपर्व १२६/४७ अर्थ–गौतमी कृपी (शरद्वान की पुत्री) ने द्रोण से अश्वत्थामा नामक पुत्र प्राप्त किया। उस बालक ने जन्म लेते ही उच्चैःश्रवा घोड़े के समान शब्द किया।

महाभारत के युद्ध की समाप्ति के बाद अश्वत्थामा ने पांडवों के पुत्रों का छल से वध किया था। पुत्रशोक में जब पांडवों ने श्रीकृष्ण के साथ अश्वत्थामा का पीछा किया तो वे भाग गए। फिर भी जब अर्जुन ने उनका पीछा न छोड़ा तब अश्वत्थामा ने अर्जुन पर ब्रह्मास्त्र चला दिया। उससे बचने के लिए अर्जुन ने भी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। तब महर्षि वेदव्यास के कहने पर अर्जुन ने अपना ब्रह्मास्त्र वापस लौटा लिया, लेकिन अश्वत्थामा को ब्रह्मास्त्र शेष पृष्ठ 10 पर

गैर मुस्लिमों को कैसे बचायें

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

प्रसिद्ध लेखिका सुश्री तसलीमा नसरीन जो प्रायः मुस्लिम कट्टरपंथियों के निशाने पर रहती है और अपनी प्रखर स्पष्टवादिता के कारण अपने देश बांग्लादेश से निर्वासित होने का वर्षो से दंश झेल रही है, की विभिन्न पुस्तकें व लेख मुस्लिम कट्टरपंथियों के विरोध में समय समय पर ज्ञानवर्धन करते रहते हैं। इसी संदर्भ में (दैनिक जागरण में १८.११.२०१७ को प्रकाशित) तसलीमा जी का एक लेख **बांग्लादेश में कैसे बचेंगे हिन्दू** पढने को मिला। निसंदेह यह सत्य हैं कि अनेक विपदाओं में जीने को विवश हिन्दुओं को विलुप्त करने के षडयंत्र पाकिस्तान के समान बांग्लादेश में भी भयावह रूप से चलाये जा रहें हैं। इस लेख का अधिकाँश भाग अत्यंत स्पष्ट व तथ्यपरक हैं साथ ही इस्लामिक जिहादियों की मानसिकता पर निर्भीक प्रहार भी करता हैं। उन्होंने अपने लेख द्वारा यह भी स्पष्ट किया है भारत और बांग्लादेश के अल्पसंख्यकों की स्थिति में अत्यधिक अन्तर है। भारत में मुसलमानों की जनसँख्या पुरे बांग्लादेश की जनसँख्या से अधिक हैं। परन्तु जब बांग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार होता हैं तो वहां की सरकार अल्पसंख्यकों (हिन्दुओं आदि) के प्रति कोई सहानभूति नहीं रखती, जबकि भारत में अगर हिन्दुओं द्वारा मुसलमानों के कुकृत्यों का विरोध भी किया जाये तो भारत का प्रशासन व बुद्धिजीवी समाज केवल हिन्दुओं को ही दण्डित करने के मार्ग तलाशता हैं , क्योंकि मुस्लिम वोट बैंक का दबाव प्रमुख कारण बना हुआ हैं। जबकि बांग्लादेश व पाकिस्तान आदि में तो अल्पसंख्यकों (हिन्दुओं आदि) के वोटों का कोई महत्व ही नहीं होता, तभी तो वहां के हिन्दू आदि अल्पसंख्यक निरंतर प्रताडित किये जा रहें हैं। उनके इस लेख के अनुसार पिछले दिनों रंगपुर (बांग्लादेश) में लगभग दस हजार मुसलमानों ने हिन्दुओं की बस्तियों में उनके घरों में लूटपाट करने के बाद आग लगा दी, कारण यह बताया गया कि किसी हिन्दू ने फेसबुक पर इस्लाम का अपमान किया था। जबकि वह अफवाह एक मुसलमान द्वारा ही फैलाई गयी थी और झूठी फेसबुक का सहारा लिया गया। इस प्रकार मुसलमानों की सुनियोजित साजिशों से सैकडो व हजारों की संख्या में दंगाइयों की भीड़ द्वारा हिन्दू बस्तियों में आगजनी, लूटमार, अपहरण व हत्याये होने से वहां के हिन्दू पलायन करने के लिए विवश किये जाते आ रहें हैं। यहाँ यह भी कहना उचित होगा कि पाकिस्तान में भी अनेक प्रकार से हिन्दुओं को पीड़ित करके धर्मांतरण करने या फिर पलायन करने का निरंतर दबाव बना रहता हैं। परन्तु तसलीमा जी का यह लिखना कि जिस प्रकार बांग्लादेश में हिन्दू विरोधी मुसलमानों की संख्या बढ़ रही हैं उसी प्रकार भारत में मुस्लिम विरोधी हिन्दुओं की संख्या भी बढ़ रही हैं, कहीं न कहीं उनकी उदार व सहिष्णु हिन्दू समाज के चारित्रिक व नैतिक मूल्यों के प्रति अज्ञानता का परिचय कराता हैं द्य उन्हें यह अवश्य ज्ञात होगा कि इस्लाम में अपने जन्म से ही (मूल इस्लामी पुस्तकों के अनुसार) अविश्वासियों (काफिरों) पर हमले करके उनको लूटना, इस्लाम स्वीकार करवाना और न मानने पर उनको नष्ट कर देना आदि मुख्य हैं। लुट में आई धन–दौलत और बालिकाओं–महिलाओं आदि को मालेगनीमत समझ कर आपस में बांटना भी इन मुस्लिम लुटेरों को सहर्ष स्वीकार हैं। इसका अभिप्राय यह हुआ कि इस्लाम में मानवीय नैतिकता, आध्यात्मिकता व चारित्रिक सिद्धान्तों का कोई मूल्य नहीं हैं। साथ ही इस्लाम में कोई स्वतः कुछ मानें या न मानें इस पर भी अनेक भ्रम फतवों के माध्यम से बनायें जाते रहते हैं। अपने विवेक से कोई कुछ उचित –अनुचित या सही–गलत मानें इसके लिए भी वह स्वतंत्र नहीं हैं। अतः यह स्पष्ट होना चाहिए कि मुस्लिम विरोधी हिन्दुओं की संख्या बढने का मुख्य कारण क्या है? जब यह सर्वविदित ही है कि किसी भी क्रिया की प्रतिक्रिया तो होती ही हैं, इसलिए जब सामूहिक मुस्लिम कट्टरता उनसे (हिन्दुओं) घृणा करती हो और उन निर्दोषों को बिना विवाद के हर संभव प्रयासों द्वारा नष्ट करने के लिए अनेक अमानवीय अत्याचारों का सहारा लेती हो और अपने इस आपराधिक व आतंकी मनोवृति में कोई परिवर्तन या संशोधन भी न करें और न ही कोई विचार करें तो फिर हिन्दू क्या करें? क्या वह यो ही लुटता पिटता रहें? साम्प्रदायिक दंगों में वह अपने व्यापारिक स्थलों व निवासों को लुटवाकर जलवाता रहें? क्या वह अपनी बहन–बेटियों की अस्मत लुटने पर भी चुप रहें? क्या वह समाज में अपराध व आतंकवाद का कोई प्रतिकार न करें, क्यों? जबकि मुसलमान ऐसा करना अपना पवित्र कार्य मानते हैं। ऐसा वे कट्टरपंथी मुसलमान इसलिए करते हैं कि अल्लाह की राह पर अल्लाह के लिए जिहाद करने की मानसिकता उनमें बचपन से ही विकसित की जाती हैं। उनकी अरबी संस्कृति भी यही पाठ पढ़ाती है कि धारदार हथियार से गैर मुस्लिमों (काफिरों) के गले काटने से शबाब के साथ जन्नत भी मिलती हैं। इसकी पुष्टि में प्राचीन मुगल इतिहास में असंख्य उदाहारण मिलते हैं। वैसे भी वर्तमान काल में पिछले कुछ वर्षो से इस्लामिक स्टेट के आतंकी काफिरों के सिर काट कर और उसका सोशल मिडिया पर बेहिचक प्रचार करके अपनी अरबी संस्कृति व दुर्दांत मानसिकता से सभ्य समाज को भयभीत कर रहें हैं। विश्व में इस्लामिक आतंकवादियों के अनेक संगठन अपने इस्लामी झंडे को सम्पूर्ण विश्व में लहरा कर उसका इस्लामीकरण (दारुल–इस्लाम) करने के उद्देश्य से जब निरन्तर सक्रीय रहेंगे तो गैर मुस्लिमों को कैसे बचाया जा सकेगा? निसंदेह ऐसी अमानवीय मनोवृति का एक तरफा विकास मदरसा शिक्षा व्यवस्था का ही परिणाम हैं। अतः क्या यह कहना उचित नहीं होगा कि जब तक इस्लामी दर्शन व विद्याओं में आवश्यक परिवर्तन नहीं होगा तब तक बांग्लादेश व पाकिस्तान सहित विश्व के अन्य मुस्लिम बहुल देशों में हिन्दू या कोई अन्य गैर मुस्लिम कैसे बचेंगे की संभावनाओं की खोज व्यर्थ ही रहेगी? इसलिए ऐसे वातावरण में सनातन वैदिक धर्म पर आधारित हिन्दू संस्कृति को समझ कर अपनाने से सकारात्मक सुधार अवश्य होंगे। हमारी संस्कृति **वसुधैवकुटुम्बकम** हमको सभी पृथ्वी वासियों को एक परिवार मानने का सन्देश देती हैं। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** अर्थात सभी सूखी रहें हम ऐसी ही मानसिकता में पले व बड़े होकर जीवन जीने में विश्वास करते हैं। हम हिन्दू अपने कार्यों को पाप व पुण्य के आधार पर विचार करके व्यवहार करते हैं। हम जीयो और जीने दो की मानसिकता को सर्वोच्च मानते हैं। प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी किसी भी प्रकार से अनुचित नहीं होगा कि अगर बहुसंख्यक हिन्दुओं के कण कण में मानवता, उदारता व सहिष्णुता के लक्षण न होते तो सन १९४७ में देश का धर्माधारित विभाजन अधूरा न हुआ होता और न ही आज हमारा देश सेकुलर होने के कारण इस्लामिक जिहाद व अन्य विभिन्न समस्याओं से जूझता।

स्व-राष्ट्र के दो वीर

✍ विमलेश बंसल 'आर्या'

हिंदी, हिन्दू, हिंदुस्थान,
श्रद्धानंद हो गए बलिदान।

गुरु गोविंद के पुत्र महान,
न्यौछावर कर गए निज प्राण।

दोनों संत सिपाही वीर,
धीर वीर दृढ़ और गम्भीर।

तरकस कमर पर धारे तीर,
हरने देश की आये पीर।

मुगलों अंग्रेजो को खदेड़ा,
शौर्य पराक्रम ले अलबेला।

सच्चा ज्ञान जीवन में उतारा,
गुरु ने तीन पीढ़ियाँ वारा।

श्रद्धानंद की श्रद्धा प्रबल थी,
गुरु दयानंद पर निष्ठा सबल थी।

गुरुकुल खोले निज बालक दे,
निज संस्कृति के खुद पालक थे।

दोनों संत सिपाही न्यारे,
शत् शत् कोटि नमन आभारे।

आओ याद करें निज वीर,
बनकर भारत की तस्वीर।

सांता क्लोज (क्लोंज–बन्द) कर संत सराहें,
निज पलकों में उन्हें समाएँ।

क्रिसमस न, किशमिश के पेड़ हों,
आर्यावर्त निज सुसंस्कृत मेढ़ हो।

भेड़ बनें न विदेशियों के,
गौपालक हों मवेशियों के।

आओ अपने दिवस मनाएं,
कुर्बानियों की स्मृति लाएं।

प्रेरित हो निज राष्ट्र बचाएं,
कीर्ति बढ़ाएं आनंद पाएँ।

विमल स्वस्थ समृद्ध सुखी,
स्वराष्ट्र अखंड निर्माण कराएं।

वीरों को प्रेरणा बनाएं,
पुण्य दिवस बलिदान मनाएं।

महापुरुषों को शीश झुकाएं,
पदचिन्हों पर चलते जाएं।।

कंधार का तालिबान आतंकवादी मुल्ला मोहम्मद उमर

✍ हरिकृष्ण निगम

(पिछले अंक का शेष)

लगभग उसी समय संगेसर के नजदीक एक आपराधिक मनोवृत्ति के तालिबान योद्धा में कुछ युवतियों के साथ बलात्कार किया था। यह कहा जाता है कि उसी के दूसरे दिन खुश होकर उमर व उसके कुछ साथियों ने अपराधियों को पकड़ लिया और उसकी हत्या कर उसके शव को नजदीक के एक टैंक की बैरल से लटका दिया। एक रेडियो प्रसारण में मुल्ला उमर ने अपने प्रशिक्षार्थियों को इस प्रकरण को सुना कर इस तरह के भ्रष्टाचार से जूझने का आग्रह किया। तालिबान की अपनी पुलिस मैनी और न्याय की प्रतिशोध–पद्वति शुरू हो चुकी थी और १९९४ के अंत तक उसकी पकड़ कंधार पर पक्की हो गई थी। पर उसके जिहादी आन्दोलन को असली ताकत पाकिस्तान की खुफिया एजेन्सी की आर्थिक सहायता से मिली थी। त्वरित न्याय देने के आश्वासन से धर्मान्ध प्रसन्न थे– सारे अफगानिस्तान में उसके शासन की सार्थकता उसकी न्याय देने की प्रणाली से बढ़ती गई। इस प्रकार तालिबान का सृजन एक व्यक्ति द्वारा नहीं बल्कि एक मानसिकता वाले धर्मान्ध समूह द्वारा किया गया था। यह बात स्वयं मौलवी कलामुद्दीन जो इस्लामी अमीरेट ऑफ अफगानिस्तान के एक पूर्व मंत्री थे, ने स्वीकार की है।

मुल्ला उमर के कुछ सार्वजनिक भाषणों को जो उसने १९९६ में दिए थे, अभिलेखित किया गया जिसके तुरन्त बाद उन्होंने काबुल की सत्ता हथियाई थी। कन्धार में उमर ने लगभग १५०० इस्लामी विद्वानों का सम्मेलन इसलिए बुलाया था कि उनके नेतृत्व को धार्मिक वैद्यता मिल जाएं। अमीर एक दिन शहर की एक छोटी मस्जिद में आया जहां गुलाब की कलियाँ बिछी हुई थी। अन्दर तीन बक्से रखे थे– एक सोने का, दूसरा काठ का और एक लोहे का सन्दूक था। कन्धार का सर्वाधिक प्रसिद्ध धार्मिक अवशेष एक चोगा जिसके लिए कहा जाता है कि वह पैगम्बर द्वार पहना गया था, उसमें रखा था। राजनीतिक नेता इस पवित्र चोगे को दुलर्भ अवसरों जैसे खतरों के अवसर पर प्रदर्शित कर प्रार्थना करते थे जिससे सूखे या महामारी का संकट टल जाए। कहा जाता है कि उमर ने वह पवित्र पोशाक लाने के लिए कहा। प्रचार की शैली में आयोजित रैली में जो उसके सलाहकारों ने कंधार से लगे बाहरी क्षेत्र में आयोजित की थी, उसे निकाला गया। मुल्ला मसूद अखुण्डजादा जो उस चोगे की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था उसने कहा– 'हम लोगों मुल्ला उमर को पवित्र पोशाक बाहर निकालने में मदद की पर उसने वैसा नहीं किया जैसा हम चाहते थे। एक मकान की छत पर चढ़कर उमर ने रैली में विशाल भीड़ के समक्ष व पवित्र वस्त्र लहराया। एक क्षण उसने उसे अपने कंधों पर डाला। उस महासम्मेलन में उपस्थित इस्लामी विद्वानों ने उसके राज्यारोहण पर मोहर लगाते हुए घोषित किया कि आज से उमर अमीर उल– मोमिनीन या आस्थावानों का नेता कहलाएगा। यह पदवी समय समय पर इस्लामी इतिहास में बलशाली नेता लेते रहे है। आज भी उस समय के १५ वर्ष बाद उमर के प्रकाशित वक्तव्यों के नीचे लिखा जाता है–इस्लाम का सेवक और ईमानवालों का नेता। वैसे कहा जाता है कि मुल्ला उमर एक सादा –सीधा व्यक्ति है जो मस्जिद के निकट एक बड़े मदरसे का संचालन करता हैं वह कहते है कि लोग उसका उपयोग करते हैं और उसकी प्रतिष्ठा व यश से अपना उल्लू सीधा करते हैं। यदि वे पवित्र वस्तु का उपयोग न करते तो शायद रैली में भीड़ भी न जुटा पाते और राजनीतिक ताकत भी नहीं बढ़ा पाते।

अफगानिस्तान में सत्ता में आने के बाद मुल्ला उमर ने सार्वजनिक रूप से वीभत्स दण्ड देकर विश्व की संवेदनशीलता पर आघात किया था। सिर काटा जाना, कोड़े लगवाना, चोरों के हाथ कटवाना, व्याभिचार के अपराध में दोषी को पत्थरों से मार डालना–यह सब जब भीड़ भरे स्टेडियम में किया जाता था तब देश का पारम्परिक राजनैतिक आभिजात्य वर्ग कांप जाता था। सार्वजनिक विक्षिप्तता और सभ्य विश्व की संवेदनशीलता पर पड़ते हुए आघात को आज भी लोग सहसा विस्मृत नहीं कर सकते है। अफगानिस्तान के उत्तरी क्षेत्र में फारसी और तुर्की प्रभावित शिक्षित और उदार दृष्टि के अनेक लोगों को सदमा पहुंचा था। तालिबान मूल रूप से पश्तूनों का वह जनजातीय समूह का जिसमें अफगानिस्तान की लगभग दक्षिण और पूर्व में रहने वाली आधी जनसंख्या आती थी। मुल्ला उमर की न्याय प्रणाली जब कार्यान्वित होती थी वह खेतिहर पश्तूनों के ग्रामों में उत्साह से स्वीकार की जा रही थी कंधार के नजदीक की नदी की घाटियों में थे। दशकों से इस स्थानों में अशिक्षा का बोलबाला था। बच्चों के लिए मदरसे तो थे पर लड़कियों को अलग–थलग और पिछड़ा ही बना कर रखा जाता था। पूर्व तालिबान सरकार के कुछ मंत्री बाद तक वक्तव्य देते रहे थे कि मुल्ला उमर का मस्तिष्क मौलिक रूप से ग्रामीण था। यहां तक कि अमीर और उसके प्रमुख सलाहकारों ने इस्लामी न्यायप्रणाली के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कोई बड़े संस्थान में कभी कोई अध्ययन नहीं किया था जैसे काहिरा का अल–अजहर विश्वविद्यालय आदि।

ओसामा बिन–लादेन अफगनिस्तान में सूडान से मई १९९६ में पहुंचा और पहली बार मुल्ला उमर से तभी मिला। वह परिवार के साथ कंधार आया और अमीर के प्रति स्वामिभक्ति घोषित कर तालिबान का अतिथि बन गया। आते ही उसने प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किए। अगले कुछ ही वर्षो में तालिबान की क्रूर न्यायप्रणाली और अल–कायदा के अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी प्रकरणों ने, मुल्ला उमर को उस वैश्विक भूमिका निभाने के लिए तैयार कर डाला जिसकी उसने कल्पना भी न की होगी। इस्लामी शरिया को हर प्रकार से लागू करने के लिए कटिबद्ध था यद्यपि उसे दुनियां के बाहर क्या हो रहा है शायद इसका सही अनुमान नहीं था। मजे की बात है कि कट्टर होने के बावजूद भी वह संगीत का शौकीन था। यद्यपि उसके शासन ने सार्वजनिक संगीत समारोहों और टेप व सी. डी. की ब्रिकी पर प्रतिबंध लगाया था पर उसकी निजी संगीत प्रियता सभी को विदित थी न उसकी चार पत्नियां थी जिनसे कई बच्चे हुए थे। जो आज भी जीवित हैं और कुछ उसके साथ ही रहते है। कंधर के सरकारी भ्वन या उसके आवास में वे वह बिना टीम–टाम के लोगों से मिलता था। घर पर तो वह एक चारपाई पर ही बैठता था और मिलने वाले ननीचे एक गलीचे पर बैठता था। गैर–मुस्लिम दलों से बहुधा वह नहीं मिलता था। अपवाद भी थे जब वह स्पेनी मूल के राष्ट्रसंघ के एक विशेष दूत और चीनी राजदूत से मिला था अपने शासन में बमियान का विशाल बुद्ध मूर्तियों के विध्वंस को वह तर्क का जामा पहनाता रहा क्योकि उसके मत में वे गैर–इस्लामी थीं। कुख्यात पाकिस्तान पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ, जिसने १९९९ में जबर्दस्ती सत्ता हासिल की थी अन्दर ही अन्दर आतंकवादियों से सांठ गांठ के पक्ष में शुरू से था उसने भी तालिबान को अपनी बात समझाने की कोशिश की थी पर जब वह मुल्ला उमर से मिला था हताश

हो गया था। अपने संस्मरणों में जनरल परवेज, मुशर्रफ ने संकेत दिया है– ऐसे व्यक्ति से कौन सार्थक वार्ता कर सकता है? मुर्शरफ के अनुसार मुल्ला उमर यर्थाथ से बहुत दूर। उमर के अनेक पहले के साथी उसे धैर्यवान श्रोता भी मानते थे। वे अपने साथ बात करने वाले को टोकते नहीं थी पर कुछ प्रकरण ऐसे भी थे जिससे उनके व्यवहार का रूप भी सामने आता है। एक बार जब सऊदी अरब के खुफिया एजेन्सी के प्रमुख तुर्की अल–फैजल कंधार उनसे मिलने आए और आग्रह करने लगे कि बिन–लादेन को उन्हें सौंपा जाए जब मुल्ला उमर क्रोध से बाहर निकल गए। कुछ मिनटों बाद वे कमरे में लौटे, उनके बालों से पानी टपक रहा था, उनकी कमीज की बाहें गीली थीं। आते ही उन्होंने जोर से कहा– मैं दूसरे कमरे में अपने सिर पर ठंड पानी अपना क्रोध कम करने के लिए डाल रहा था और यदि आप मेरे अतिथि नही होते तब मैं आपके साथ कुछ भी कर सकता था। "मुशर्रफ के अलावा कुछ दूसरे प्रतिष्ठित मुस्लिम नेताओं के अनुसार मुल्ला उमर से वार्ता करना दीवार से सिर पटकना जैसा है। **(शेष अगले अंक में)**

पुणे का शनिवारवाड़ा

✍ रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

छत्रपती शाहू बचपन से ही मुगलों के कैदी थे। कैद में न तो उन्हें कुछ काम करना पड़ता था ना कोई राजनीति। इसलिए वे ऐयाशी बने थे। उनका पराक्रम लुप्त हुआ था। शांत स्वभाव के मिलनसार व्यक्ति होने के नाते वे युद्ध के बजाय शांतिवार्ता से झगड़े मिटाने में माहिर थे। वे बड़े सियासी थे। उन्हें आदमी की पहचान थी। उनकी शानो–शौकत, रहनसहन मुगलों जैसी थी। उन्हें पेशवे पर पूरा भरोसा था। बाळाजी विश्वनाथ उनके सुपुत्र प्रथम बाजीराव तथा बाजीराव के पुत्र नानासाहब पेशवाओं की बुद्धिमानी, पराक्रम से और राजकारण से प्रभावित थे और परिचित भी थे। पेशवाओं के असिम पराक्रम से भारतवर्ष में मराठा राज्य की अलग पहचान और रोब था। इस फैले हुए राज्य के सूत्र पुणे के शनिवारवाडे से संचालित होते थे। एक जमाना था, हिंदुस्थान के सारे रास्ते दिल्ली की तरफ जाते थे। और अब पासा पलट गया था, हिंदुस्थान के सारे रास्ते पुणे की ओर जा रहे थे।

छत्रपती शाहू महाराज का देहांत होते ही नानासाहब पेशवा ने सातारा तथा कोल्हापूर ये दोनों राजघरानों के आपसी कलह के बीच राजनीति करके सातारा स्थिति मराठों की राजधानी पुणे में लाई। शाहू महाराज की कोई संतान नहीं थी। राजपाट के लिए नाममात्र छत्रपती की जरूरत थी। इसलिए शाहू छत्रपती के नजर कैद में रखी हुई उनकी काकी ताराबाई के पोते को उन्होंने राजगद्दी पर बिठाया। पर वास्तव में सारी सत्ता उस वक्त नानासाहब पेशवे के हाथ में आई थी।

शनिवारवाडे से अब नानासाहब पेशवे के अधिकार से जोरशोर से राजकाज करने लगे। उनके राजकारण से और बुद्धिमत्ता से उन्होंने ताराबाई के नाक में दम कर दिया। विरोध करने वाले खानदानी पराक्रमी वीर सरदारों को चुप किया। अब मराठा राज के नानासाहब सर्वेसर्वा बन चुके थे। उन्हें विरोध या उनके निर्णय को विरोध करने वाला कोई नहीं था।

पुणे शहर और शनिवारवाडा अब हिंदुस्थान के राजकारण का केंद्रस्थान बना। पुणे का सौंदर्य शहर के बढ़ने के साथ बढ़ रहा था। शिक्षा–राजनीति, सांस्कृतिक, आर्थिक बढ़ावा मिलने लगा, सभी क्षेत्र में पुणे का महत्त्व बढ़ता रहा। आर्थिक स्तर बढ़ने से व्यापार में तेजी आई। इसके साथ ही शनिवारवाडे का महत्त्व और नाम नानासाहब और शिवछत्रपती का मराठा राज्य पेशवाओं के रूप में पुणे में वृद्धिगत होने लगा।

छत्रपती शाहू महाराज के निधन के बाद राज्य की बागडोर पेशवाओं के हाथ आई। बदकिस्मती से शिवाजी महाराज के खानदान में कोई ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ जो पेशवे के बढ़ते प्रभाव से उन्हें रोके। रामराजे थे, तो उनके ऊपर अपनी दादी माँ ताराराणी की हुकूमत चलती थी। उन्हें राजपाट का कोई अनुभव नहीं था। सलाहकार पर उनका तुरन्त विश्वास होता था। ताराबाई के वजह से वे खुद निर्णय कभी नहीं लेते थे। नानासाहब के कारण ही अपने को राजगद्दी का हक मिला है ये सोचकर वे हमेशा नानासाहब का ही आदेश मानते थे। रामराजे नाममात्र राजे थे। राजवंश के वंशज होने के नाते उन्हें राजगद्दी प्राप्त हुई थी। सत्ता सातारा और कोल्हापूर घराने में विभाजित हो जाने के कारण पेशवाओं को लगाम लगाने वाला कोई नहीं था। इसलिए नानासाहब पेशवा ने वक्त का फायदा उठाते हुए मराठा सत्ता अपने कब्जे में की। लेकिन सातारा घराणे की राजगद्दी से वफादारी और ईमानदारी का नाटक उन्होंने खूब रचाया था। क्योंकि उनको साथ देने वाले अधिकतर शूर, बुद्धिमान सरदार तो मराठे थे। पेशवे को जिन मराठों ने विरोध किया था, उन्हें पेशवा ने खच्ची करके राजनीति से दूर रखा था।

शाहू के देहांत के बाद बाळाजी बाजीराव ने शनिवारवाडे की बाह्य रचना की, बाहरी दीवारें, बुर्ज, दिल्ली दरवाजा आदि काम पूरा किया। सारे पेशवाओं के महल इस दीवारों के अंदर आ गये। शनिवारवाडे के द्वार पर पुरानी दिल्ली स्थित इंद्रप्रस्थ या पुराने किले के दरवाजों का प्रभाव महसूस होता है जो दिल को लुभाता है।

दिल्ली दरवाजे की पूर्व दिशा में मस्तानी तथा अलिबहादुर नामक दरवाजा है। मस्तानी का इस दरवाजे से आना जाना था। इस वाडे के आग्नेय कोने में जो दरवाजा है, उसे गणेश दरवाजा के नाम से जाना जाता है। इस दरवाजे के प्रकोट में संगमरमर की गणेशजी की मूर्ति की स्थापना की है। आज उसी छोटेखानी मंदिर के सामने नया सभामंडप बनाकर, इस मंदिर को आकर्षक बनवाया है। यहीं से शुरू होने वाली तटबंदी में और एक दरवाजा है। जिसे कवठ दरवाजा के नाम से जाना जाता है। पेशवे जमाने में यहाँ कैथा (कपित्थ) याने शिवशंकरजी के पूजापाठ में आवश्यक बेल का पेड़ था। इस पेड़ को लगने वाले फल को मराठी में कवठ कहा जाता है।

शनिवारवाडे के दिल्ली दरवाजे से गणेश दरवाजा अधिक महत्त्वपूर्ण था। पेशवा को मिलने आने वाले सरदार, वकील, अतिथिगण, सिपाही आदि इसी दरवाजे से आते और जाते थे। अंतः इस गणेश दरवाजे पर सुरक्षा व्यवस्था तथा अनुशासन कड़ा था। इस संदर्भ में एक घटी हुई घटना इस प्रकार है।

प्रथम बाजीराव के पुत्र जनार्दन, उनकी पत्नी का नाम था सगुणाबाई। सगुणाबाई को अपने मायके जाना था। रितिरिवाजानुसार उसने अपने ससुर बाजीराव से मैके जाने की अनुमति ली थी। अब उसे वाडे के बाहर जाने के लिए पेशवा की अनुमति चाहिए थी। अनुमति के लिए सेवक बाजीराव के पास गया। उस दिन दरवाजा खोलने की इजाजत नहीं मिली। दूसरे दिन तीन घंटे इंतजार के बाद पेशवा दरबार में आये, उसके बाद पेशवा ने इजाजत दी। मैके से लौटने के बाद भी सगुणाबाई को शनिवारवाडे के अंदर आने के लिए दो घंटे इंतजार करना पड़ा। उसके साथ उसके रिश्तेदार और दास–दासियाँ भी थी। दो घंटे के बाद लिखित रूप में इजाजत मिलने के बाद उसका शनिवारवाडे में आगमन हुआ।

हर पेशवा के काल में पेशवा घराने के १५–२० तक व्यक्ति एक साथ इस वाडे में रहते थे। उसके साथ मेहमान, रिश्तेदार, आश्रित, सहकारी, सहाध्यायी, परिचारिक आदि और राजकारोबार में हाथ बंटाने वाले सेवक, सिपाही, आदि हजार बारह सौ लोग इस वाडे में रोज रहते थे। नानासाहब पेशवा के जमाने में पुणे का उत्कर्ष होने लगा था। पेशवाई उत्कर्ष की चरम सीमा पर थी। और इसलिए शनिवारवाडे में महलों की संख्या उनके कार्यकाल में ही बढ़ गई। पुणे शहर दिन–ब–दिन विकसित, विस्तृत हो रहा था। मराठों का और पेशवाओं के राजधानी का शहर बन गया था।

इ.स. १७६१ के पानीपत युद्ध में मराठों की बुरी तरह हार हुई। मराठा सत्ता को भारी सदमा पहुँचा। एक साथ लाखों मराठे पानीपत के युद्ध में शहीद हुये। पूरा मराठा साम्राज्य दुःख के सागर में डूब गया। महाराष्ट्र के घर–घर में अंधेरा छा गया। लाखों गृहस्थियाँ, घर उजड़ गये। इस युद्ध में पेशवा नानासाहब के छोटे भाई, वीर, पराक्रमी सदाशिवराव और नानासाहब के ज्येष्ठ पुत्र विश्वासराव को वीरगति प्राप्त हुई।

पानीपत के इस युद्ध ने मराठेशाही को तबाही की दहलीज पर ला खड़ा कर दिया था। भाई के पुत्र के मौत के सदमे में नानासाहब अपना मानसिक संतुलन खो बैठे। और दुख से बीमार हुए। वैद्य–हकीमों की मात्रा एक न चली। २३ जून १७६१ के दिन पुणे के पर्वती के टीले के ऊपर उन्होंने अपने महल में अपना शरीर त्यागा। बाद में नानासाहब के दूसरे चिरंजीव माधवराव जो उस समय उम्र में केवल सोलह साल के थे, उनके कंधों पर पेशवे पद की जिम्मेवारी आ गई।

माधवराव २७ जुलाई १७६१ में पेशवा बने। उनका कार्यकाल कुल मिलाकर अकरा साल का रहा। पानीपत में मराठों की जबरदस्त हार ने पुरे हिंदुस्थान में फैले हुए मराठों के शत्रु की हिम्मत बढ़ी। लेकिन माधवराव पेशवे ने अपार मेहनत, लगन और नेतृत्व गुण से निजाम और हैदर जैसे शत्रुओं को मिट्टी खिलाई। पूरे हिंदुस्थान में मराठा राज्य का डंका फिर एक बार बजा दिया और प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली।

पानीपत के युद्ध में इ. स. १७६१ में पेशवे घराणे के चार वीर जवान, पेशवाई के चार आधार स्तम्भ की मृत्यु हुई। माधवराव पेशवे बने लेकिन उनके पराक्रमी चाचा, राघोबादादा को सत्ता लालसा निर्माण हुई। माधवराव के राज्य कारोबार में वे रोड़े अटकाने लगे। गृह कलह ने माधवराव को त्रस्त किया। फिर भी उनके कार्यकर्तृत्व से पूरा मराठा समाज, सब सरदार उनके पीछे पहाड़ की तरह खड़ा था। मराठा सल्तन्त की ओर आँख उठाकर देखने की हिम्मत करने के लिए शत्रुओं को सोचना पड़ता था।

इ.स. १७६१ के बाद आगे १५ साल में माधवराव पेशवे सहित पेशवे घराणे में ७ व्यक्तियों की मृत्यु हुई। इस बीच निजाम ने पेशवाओं का नामोनिशान मिटाने के लिए पुणे शहर पर आक्रमण किया। पुणे की लूटपाट की। अग्निकांड किया। पुणे की सारी अर्थव्यवस्था मिट्टी में मिल गई। उसका असर शनिवारवाडे पर हुआ। कुछ नई इमारतें बंधवाई गई तो कहा केवल मरम्मत के लिए खर्चा किया गया।

सिर्फ सोलह साल के उम्र में ही मराठा राज्य की बागडोर नियती ने माधवराव को सौंपी थी। शेष पृष्ठ 11 पर

कब कैसा नववर्ष हमारा?

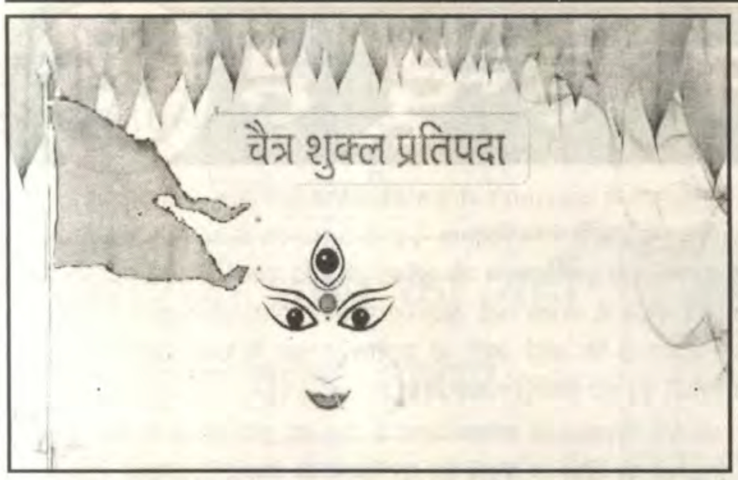

✍ विनोद बंसल

भारत व्रत पर्व त्यौहारों का देश है जिसका हर दिन कोई न कोई विशिष्टता लिए हुए होता है। कोई किसी महापुरुष का जन्मदिवस है तो कोई पुण्य तिथि। कोई फसल से सम्बंधित होता है तो कोई किसी खगोलीय घटना से सम्बन्धित। कोई समाज जीवन को प्रेरणा स्वरूप मनाया जाता है तो कोई किसी घटना विशेष को याद रख कर उससे सदैव ऊर्जावान बने रहने के लिए। एक बात तय है कि हमारे यहाँ कुछ भी यूं ही नहीं मनाया जाता बल्कि, प्रत्येक उत्सव/त्यौहार का कोई न कोई एक सामाजिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक या राष्ट्रीय कारण अवश्य होता है। किन्तु हां! कालान्तर में हमारे देश में कुछ पर्व त्यौहार या परम्पराएं ऐसी भी घुस आई जो हमारे इन सिद्धांतों से कभी मेल नहीं खातीं फिर भी हमने उन्हें अपना लिया।

अंग्रेजी कैलेंडर के प्रथम दिवस यानी एक जनवरी के आने के एक सप्ताह पहले ही क्रिसमस और नए साल के आगमन की तैयारियों का जोश चारों ओर नजर आने लगता है। इस जोश में अधिकतर लोग अपना होश भी खो बैठते हैं। करोड़ों रुपये नववर्ष की तैयारियों में लगा दिए जाते हैं। होटल, रेस्त्रा, पब इत्यादि अपने–अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग्स, पोस्टर और कार्डों के साथ शराब की दुकानों की भी खूब चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियां गाडियों से भिड़ने लगती हैं और घटनाएं दुर्घटनाओं में बदलने में देर नहीं लगती। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्योहार मनाने की परम्परा!

जिस प्रकार ईस्वी संवत ईसा से संबंधित है, ठीक उसी प्रकार, हिजरी संवत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु भारतीय काल गणना के प्रमुख स्तंभ विक्रमी संवत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत और ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानी संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के २७वें व ३०वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः ४५ व १५ में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौरमण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और, देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचांग पर आधारित होता है न कि अंग्रेजी कैलेंडर पर। भारतीय मान्यता के अनुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाये तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं।

भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं, उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। शेष पृष्ठ 11 पर

मकर संक्रान्ति पर्व इसके महत्त्व को जानकर श्रद्धापूर्वक मनायें

✍ मनमोहन कुमार आर्य

मकर संक्रान्ति का पर्व प्रत्येक वर्ष १४ जनवरी को देश भर में मनाया जाता है। आजकल लोग पर्व तो मनाते हैं परन्तु बहुत से बन्धुओं को पर्व का महत्त्व व उससे जुड़ी हुई घटनाओं का ज्ञान नहीं होता। अतः यह आवश्यक है कि पर्व के सभी पक्षों को संक्षेप से जान लिया जाए। इस पर्व का पहला महत्त्व हमारे सौरमंडल तथा मकर राशि से है। हम जानते हैं कि पृथ्वी में दो प्रकार की गतियाँ होती हैं। एक तो यह अपने अक्ष पर घूमती है। दूसरी गति इसके द्वारा सूर्य की परिक्रमा की जाती है जो एक वर्ष में पूरी होती है। एक परिक्रमा के काल व समय को सौर वर्ष कहते हैं। पृथ्वी का सूर्य की परिक्रमा का जो पथ होता है वह कुछ लम्बा वर्तुलाकार होता है। मकर संक्रान्ति के दिन से चलकर पुनः उसी स्थान पर आने व सूर्य का एक पूरा चक्र करने के मार्ग व परिधि को **''क्रान्तिवृत्त''** कहते हैं। हमारे ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के १२ भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उन–उन स्थानों पर आकाश के नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती–जुलती आकृति वाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गए हैं। यह बारह नाम हैं–मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। **क्रान्तिवृत्त पर कल्पित प्रत्येक भाग व नक्षत्र पुंजों की आकृति ''राशि'' कहलाती है। पृथ्वी जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश व संक्रमण करती है तो इस संक्रमण को ही ''संक्रान्ति'' कहा जाता है।** लोकाचार में पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं। मकर संक्रान्ति का अर्थ हुआ कि सूर्य मकर संक्रान्ति के दिन मकर राशि में प्रवेश करता है। ६ महीनों तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता है और ६ मास तक दक्षिण की ओर से निकलता रहता है। इन ६ मासों की अवधि का नाम **'अयन'** है। सूर्य के उत्तर की ओर से उदय की ६ मास की अवधि का नाम **'उत्तरायण'** और दक्षिण की ओर से उदय की अवधि को **'दक्षिणायन'** कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उस दिन में दिन का काल बढ़ता जाता है तथा इस अवधि में दिन के बढ़ने से रात्रि का काल कम होने से रात्रि घटती है, इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता है। दक्षिणायन में सूर्योदय क्रान्तिवृत्त के दक्षिण की ओर से उदय होता हुआ दृष्टिगोचर होता है तथा रात्रि की अवधि में वृद्धि होती है। **सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता व संक्रान्त होता है तो इसको उत्तरायण का आरम्भ होना तथा कर्क राशि में प्रवेश से दक्षिणायन का आरम्भ होना माना जाता है जिन दोनों अयनों की अवधि ६ माह होती है।** उत्तरायण में दिन बढ़ने व रात्रि छोटी होने से पृथ्वी पर प्रकाश की अधिकता होती है इस कारण इस उत्तरायण का महत्त्व दक्षिणायन से अधिक माना जाता है। उत्तरायण के महत्त्व का आरम्भ मकर संक्रान्ति से होने के कारण मकर संक्रान्ति (१४ जनवरी) के दिवस को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है और इस दिन को पर्व के रूप में मनाये जाने की प्रथा है। यह भी जानकारी दे दें कि ज्योतिष के आचार्य बताते हैं कि उत्तरायण का आरम्भ मकर संक्रान्ति के दिन से पहले हो जाता है परन्तु मकर संक्रान्ति पर्व पर ही दोनों पर्व एक साथ

मनाये जाने की परम्परा चली आ रही है। भविष्य में इन्हें अलग–अलग तिथियों पर मनाये जाने पर विचार भी किया जा सकता है। जो भी हो इस पर्व को मनाये जाने का मुख्य उद्देश्य मकर संक्रान्ति का ज्ञान कराने सहित ६ माह की अवधि वाले उत्तरायण के आरम्भ से है जिससे लोग हमारे पूर्वजों के ज्योतिष विषयक ज्ञान व रुचि से परिचित हो सकें।

मकर संक्रान्ति पर्व मनाये जाने का दूसरा आधार व कारण इसका शीत ऋतु में आना है। मकर संक्रान्ति के दिन १४ जनवरी को शीत अपने यौवन पर होती है। इस दिन मनुष्यों के आवास, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक सा रहता है। चराचर जगत शीत ऋतु का लोहा मानता है। मनुष्य व वन्य आदि प्राणियों के हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं। शरीर ठिठुरन से त्रस्त रहता है। बहुत से वृद्ध शीत की अधिकता से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। हृदय रोगियों के लिए भी शीत ऋतु कष्ट साध्य होती है। इन दिनों सूर्योदय से दिन का आरम्भ होता है परन्तु सूर्य शीघ्र ही अस्त हो जाता है अर्थात् सूर्योदय और उसके अस्त होने के बीच कम समय होता है जबकि लोग अधिक समय तक सूर्य के प्रकाश व उष्णता की अपेक्षा करते हैं। मकर संक्रान्ति से पूर्व रात्रि की अवधि अधिक होती है जिससे लोगों में क्लेश रहता है परन्तु मकर संक्रान्ति के दिन से रात्रि का समय बढ़ने और दिन का घटने का क्रम बन्द हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मकर संक्रान्ति के शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : धारा-३७० समाप्त करने, समान नागरिक संहिता लागू करने की मांग।

महोदय,

देशहित में निम्नलिखित निर्णय लेने की कृपा करें:-

१. जम्मू-कश्मीर सम्बंधी संविधान की धारा ३७० अविलम्ब समाप्त की जाए।

२. समान नागरिक संहिता लागू की जाए।

३. जम्मू-कश्मीर में सुश्री महबूबा मुफ्ती की सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये।

४. जम्मू-कश्मीर में सेना को, आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को कुचलने के लिए पूरी छूट दी जाए।

५. अलगाववादी नेताओं की सुरक्षा व्यवस्था अविलम्ब समाप्त की जाए।

६. गौहत्या पर पूरे देश में पूर्ण रूप से रोक लगायी जाये। गौहत्या करने वालों को आजीवन कारावास की सजा दी जाये।

विश्वास है कि आप कृपा करके उपर्युक्त सब अनुरोधों को स्वीकार करेंगे ।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,
श्री रामनाथ कोविंद जी,
माननीय भारत के राष्ट्रपति
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-११०००४

विषय : राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल उद्यान का नाम बदलकर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उद्यान करने का अनुरोध।

महोदय,

आपको ज्ञात है कि ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस ने ब्रिटिश शासन काल में बने वायसराय हाउस में एक खूबसूरत उद्यान का निर्माण कराया था, जिसका नाम मुगल उद्यान रखा गया था। परन्तु १५ अगस्त १६४७ को भारत के स्वतंत्र हो जाने के उपरान्त वायसराय हाउस का नाम बदलकर राष्ट्रपति भवन रख दिया गया था। परन्तु मुगल उद्यान का नाम अभी तक नहीं बदला गया है। आपको यह भी ज्ञात है कि कुछ दिनों पूर्व ही मुगल सराय रेलवे स्टेशन का नाम बदला गया है। इसलिये अंग्रेजी शासन काल में रखे गये नाम मुगल उद्यान को भी शीघ्र बदल दिया जाये। आपको यह भी ज्ञात है कि मुगल उद्यान आम जनता के दर्शनार्थ सुलभ नहीं था। परन्तु भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने इसे आम जनता के दर्षनार्थ खुलवाया था।

अतः आपसे हमारा अनुरोध है कि मुगल उद्यान का नाम बदल दिया जाये तथा इसका नाम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद उद्यान रख दिया जाये। आशा है कि इस पर शीघ्र निर्णय लेने की कृपा करेंगे।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 9 का

मकर संक्रान्ति पर्व इसके महत्त्व......

मकर ने उस लम्बी रात्रि को निगलना आरम्भ कर दिया है। इस दिन सूर्य देव उत्तरायण में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थों पर्यन्त विशेष रूप से वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उत्तरायण को 'देवयान' कहा जाता है और ज्ञानी लोग अपने शरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण वा देवयान में रखते हैं। उनका मानना होता है कि उत्तरायण में देह त्यागने से उन की आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए देहत्याग वा प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। मकर संक्रान्ति के ऐसे प्रशस्त महत्त्व वा समय को पर्व बनने से वंचित नहीं रखा जा सकता। आर्य पर्व पद्धति के लेखक पं. भवानी प्रसाद जी ने लिखा है कि आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) को पर्व निर्धारित कर दिया।

मकर संक्रान्ति का पर्व चिरकाल से मनाया जाता है। यह पर्व प्रायः भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सर्वत्र इस पर्व पर शीत के प्रभाव को दूर करने के उपाय किये जाते दिखाई देते हैं। वैद्यक शास्त्र ने शीत के प्रतीकार के लिए तिल, तेल, तूल (रूई) का प्रयोग बताया है। तिल इन तीनों में मुख्य है। पुराणों में तिल के महत्त्व के कारण कुछ अतिशयोक्ति कर इसे पापनाशक तक कह दिया गया। किसी पुराण का प्रसिद्ध श्लोक है-**'तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमो तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च शट्तिला पापनाशनाः।।'** अर्थात् तिल-मिश्रित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन, तिल का जल, तिल का भोजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग पापनाशक हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सब प्रान्तों में तिल और गुड़ के लड्डू बनाकर दान किये जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। तिल को कूटकर उसमें खांड मिलाकर भी खाते हैं। यह एक प्रकार से मिष्ठान की भाँति रूचिकर होता है। महाराष्ट्र में इस दिन तिलों का **'तिलगूल'** नामक हलवा बाँटने की प्रथा है और सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कन्याएँ अपनी सखी-सहेलियों से मिलकर उन को हल्दी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करती हैं। यह पर्व प्राचीन भारत की संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है जिसका प्रचलन स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर भी किया गया है। आज के समय में जो मिष्ठान हैं वह प्रायः स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं। यह भी कहा जाता है कि प्राचीन ग्रीक लोग भी वधू-वर को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पकवान बाँटते थे। इससे ज्ञात होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विशेष गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में मकर संक्रान्ति के दिन अंजीर, खजूर और शहद अपने इष्ट मित्रों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व की सार्वत्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

अतः मकर संक्रान्ति का पर्व अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। इसे मनाते समय इससे जुड़ी उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसा कर हम स्वयं भी इनसे परिचित्त रहेंगे और हमारी भावी पीढ़ियाँ भी इन्हें जानकर उसे अपनी आगामी पीढ़ियों को जना सकेंगी। इस दिन यज्ञ करने का भी विधान किया गया है। यज्ञ करने से वातावरण दुर्गन्धमुक्त होकर सर्वत्र सुगन्ध का प्रसार करने वाला होता है। यज्ञ स्वास्थ्य के लिए तो यह लाभप्रद होता ही है इसके साथ ही इससे ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना भी सम्पन्न होती है। यज्ञ के गोघृत व अन्न-वनस्पतियों की आहुतियों का सूक्ष्म भाग वायुमंडल को हमारे व दूसरे सभी के लिए सुख प्रदान करने में सहायक होता है। आर्यपर्व पद्धति में यज्ञ करते हुए हेमन्त और शिशिर ऋतुओं की वर्णनपरक ऋचाओं से विशेष आहुतियों का विधान किया गया है जिससे यज्ञकर्ता व गृहस्थी उनसे परिचित हो सकें। भारत की प्राचीन वैदिक धर्म व संस्कृति विश्व के सभी मनुष्यों के पूर्वजों की धर्म व संस्कृति रही है। इसका संरक्षण और प्रसार सभी मनुष्यों का पावन कर्तव्य है। हमें प्रत्येक कार्य करते हुए यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति करना है। हम ऐसा कोई कार्य न करें जिससे इन उद्देश्यों की पूर्ति में बाधा हो और ऐसा कोई काम करना छोड़ें जो इन उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो सकते हैं। मकर संक्रान्ति पर्व की शुभकामनाओं सहित।

शेष पृष्ठ 5 का

भगवान शंकर के अवतार थे.....

लौटाने का ज्ञान नहीं था। तब उन्होंने अपने अस्त्र की दिशा बदलकर अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भ की ओर कर दी। क्रोधित होकर भगवान् श्रीकृष्ण ने अश्वत्थामा के माथे पर लगी मणि निकाल ली और कलयुग के अंत तक उसे पृथ्वी पर भटकने का श्राप दिया। भगवान शंकर का यह अवतार हमें संदेश देता है कि हमें सदैव अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए क्योंकि क्रोध ही सभी दुःखों का कारण है। यह गुण अश्वत्थामा में नहीं था। साथ ही एक और बात जो हमें अश्वत्थामा से सीखनी चाहिए वह यह कि जो भी ज्ञान प्राप्त करें उसे पूर्ण रूप से प्राप्त करें, अधूरा ज्ञान सदैव हानिकारक रहता है। अश्वत्थामा ब्रह्मास्त्र चलाना तो जानते थे, लेकिन उसे लौटाना नहीं। फिर भी उन्होंने अर्जुन पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया जिसके कारण संपूर्ण सृष्टि के नष्ट होने का खतरा उत्पन्न हो गया था। इस तथ्य से हमें यह शिक्षा मिलती है कि क्रोध तथा अपूर्ण ज्ञान से कभी सफलता नहीं मिलती। असीरगढ़ किला बुरहानपुर से लगभग २० किमी. की दूरी पर उत्तर दिशा में सतपुड़ा पहाड़ियों के शिखर पर समुद्र सतह से ७५० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। बुरहानपुर खंडवा से लगभग ८० किमी. दूर है। यहाँ से बुरहानपुर तक जाने के लिए ट्रेन, बसें व टैक्सी आसानी से मिल जाती हैं। यहाँ से सबसे नजदीकी एयरपोर्ट इंदौर है, जो करीब १८० किमी. दूर है। बुरहानपुर मध्य प्रदेश के सभी बड़े शहरों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा है।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

ब्रह्मपुत्र नदी का पानी नाले की.......

जाता है। इससे पहले मीडिया में आई खबर में ब्रह्मपुत्र नदी में भारी प्रदूषण की बात कही गई थी। इस नदी को अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी के नाम से जाना जाता है। एक हिस्से में खबरों में अरुणाचल प्रदेश के करीब तिब्बत में रोधिका झील बैरियर लेक बनाने की बात कही गई थी। इसने नदी में संभावित बाढ़ को लेकर चिंता पैदा कर दी थी। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा हमने गौर किया है कि भारतीय मीडिया ने हाल में इस मुद्दे पर कई खबरें प्रकाशित कीं। उन्होंने कहा कि चीन जल संरक्षण परियोजना चला रहा है या खदान का इस्तेमाल कर रहा है। हालांकि अब दावा करता है कि धारा के प्रतिकूल रोधिका झील बैरियर लेक का निर्माण किया जा रहा है। उन्होंने कहा मैं जिम्मेदारी के साथ कह सकती हूं कि चीनी अधिकारियों की जांच के निष्कर्षों के अनुसार कोई भी अटकल सही नहीं है। उन्होंने कहा कि तिब्बत के मेनलिंग काउंटी के निकट क्षेत्र में मध्य नवंबर में आए ६.६ की तीव्रता वाले भूकंप की वजह से हो सकता है कुछ समय के लिये नदी के मध्य और निचले हिस्से में गंदगी पैदा हुई हो। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से कहा है कि भारत सरकार चीन की इस गलत नीति का तीव्र विरोध करें।

शेष पृष्ठ 1 का

पाकिस्तान ने भारतीय राजनयिक.....

जा रहा है। सेना के सूत्रों ने बताया कि घातक कमांडो का एक छोटा दल नियंत्रण रेखा पार कर करीब २००–३०० मीटर अंदर तक गया और वहां एक पाकिस्तानी चौकी को निशाना बनाया। इस ऑपरेशन में तीन पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और एक जख्मी हो गया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने मांग की है कि पाकिस्तान स्थित सभी आंतकी शिविरों पर हमला कर उसे पूर्ण से नष्ट किया जाये।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्‌दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक...300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का

पुणे का शनिवारवाड़ा.....

सत्ता के लालसा से षड्यंत्र रचने वाले, अपने खून का रिश्ता रखने वाले चाचा राघोबादादा के साथ उनकी बगावत कुचलने के लिए उन पर सिपाही भेजने पड़े। उनके साथ घोर युद्ध करना पड़ा। उन्हें कैद करके सबक सिखाना पड़ा कि ये सत्ता पेशवा की नहीं तो शिवछत्रपती के घराणे की है। पेशवा सिर्फ उसके रखवालदार हैं। प्रथम बाजीराव के पुत्र तथा माधवराव पेशवे के चाचा और नानासाहब पेशवे के छोटे भाई राघोबादादा महापराक्रमी वीर थे।

अटकपार मराठों का और शिवछत्रपती का केशरी झंडा लहराया था। लेकिन ऐसे शूर वीर राघोबादादा भूल गये कि ये राज्य 'भट' घराणे का नहीं है। वो अपने भतीजे को सत्ता का हिस्सा माँगने पर तुले। सत्ता के लिए राजकारण करने लगे। घर में फैली हुई इस आग से माधवराव पेशवे का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। दुबले–पतले माधवराव चाचा के इस रवैये से दुखी हुये। वो बीमार पड़ने लगे। उन्हें यक्ष्मा की व्याधि ने जकड़ लिया और कर्तव्यकठोर, निग्रही, शूर, पराक्रमी और उतने ही राजकारण में हमेशा ऊँचा कर्तव्य रखने वाले माधवराव पेशवे की मौत १८ नवंबर १७७२ में पुणे के नजदीक थेऊर गाँव में बसे गणेशजी के मंदिर में हुई। माधवराव के निधन से मराठों ने एक जगमगाता पेशवा खो दिया। माधवराव के देहावसन के बाद नानासाहब के छोटे पुत्र तथा माधवराव के छोटे भाई नारायणराव १७ साल की उम्र में ही पेशवे बने। १३ दिसंबर १७७२ में सातार के छत्रपती ने उन्हें पेशवे पद और वस्त्रालंकार से सन्मानित करके पेशवे पद का अधिकार दिया। शनिवारवाडे में रहने वाले पेशवाओं में सबसे बदकिस्मत पेशवा ठहरे नारायणराव ही।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 9 का

कब कैसा नववर्ष.....

राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुडे हुए हैं। यह वह दिन है, जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतः अंग्रेजी कैलेंडर के मार्च या अप्रैल माह में पड़ता है। मान्यता है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के सूर्योदय से ही ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की। भगवान श्री राम, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। आर्य समाज स्थापना दिवस, सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगददेव, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ० केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हुआ था।

यदि हम इस दिन के प्राकृतिक महत्व की बात करें तो वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष–प्रतिपदा से ही होता है, जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है। फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिए शुभ मुहूर्त होता है। क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है, जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में 'इंडिया दैट इज भारत' तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को भूल कर इंडिया को याद रखो क्योंकि पुरातन नाम से हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

राष्ट्रीय चेतना के ऋषि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, "यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहने वाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है।" इसी प्रकार महात्मा गांधी ने १६४४ की हरिजन पत्रिका में लिखा था, "स्वराज्य का अर्थ है स्व–संस्कृति, स्वधर्म एवं स्व–परम्पराओं का हृदय से निर्वाह करना। पराया धन और पराई परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान।"

आवश्यक है कि हम अपने नव वर्ष का उल्लास के साथ स्वागत करें न कि अर्धरात्रि तक मदिरापान कर हंगामा करते हुए, नाइट क्लबों में अपना जीवन गुजारें। यदि इस तरह का जीवन जीते हुए हम लोग उन्मत्त होकर अपने ही स्वास्थ्य, धन–बल और आयु का विनाश करते हुए नव वर्ष के स्वागत का उपक्रम करेंगे, तो यह न केवल स्वयं के लिए बल्कि अपनी भावी पीढ़ी, समाज और राष्ट्र के लिए भी घातक होगा। हम नववर्ष के दिन कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं, जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे सर्व प्रथम प्रभु आराधना, हवन, यज्ञ, संध्या वन्दनोपरांत हम गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करने, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने, वृक्षारोपण करने, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने, शिक्षा का प्रसार करने तथा सामाजिक कुरीतियां दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प ले कर इस ओर पहल कर सकते हैं। आइए! विदेशी दासत्व को त्याग स्वदेशी अपनाएं और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानी विक्रमी संवत् को ही मनाएं तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज टर्मिनेटर अलसी.....

दर्जा नहीं दिया है), तिल या सरसों, जैतून का तेल ही काम में लेना है। नारियल का तेल खाने के लिए सर्वोत्तम होता है, यह आपको दिल की बीमारियों से बचायेगा व आपके वजन को भी कम करेगा। यदि ठंडी विधि से निकला फ्रीज में संरक्षित किया हुआ अलसी का तेल आपके पास है तो आप इस तेल को रोजाना दो चम्मच तेल को चार चम्मच दही या पनीर में हेंड ब्लेंडर से अच्छी तरह मिश्रण बनाकर फलों या सलाद के साथ लें। अलसी का तेल हमेशा फ्रीज में रखें। अलसी के तेल को कभी गरम नहीं करें क्योंकि ४२ सेल्सियस पर यह खराब हो जाता है।

प्राकृतिक उपचार

रोजाना आधा चम्मच पिसी हुई दालचीनी, सब्जी या चाय में डालकर लें। रोज एक क्रोमियम व अल्फालाईपोइक एसिड युक्त एन्टीऑक्सीडेंट का कैप्सूल और Shilajit के दो कैप्सूल सुबह–शाम लेना है। मेथी दाना, करेला, जामुन, आँवला, नीम के पत्ते आदि का सेवन करें।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

राजनीति का हिन्दूकरण, हिन्दुओं का सैनिकीकरण, सैनिकों का आधुनिकीकरण

सादर आमंत्रण

अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश
के तत्वावधान में
बालवीर हकीकत राय
बलिदान दिवस समारोह 2018

हिन्दू वीरों का सम्मान एवं बाल प्रतिभा खोज समारोह

सांस्कृतिक कार्यक्रम	:	स्कूलों के बच्चों द्वारा राष्ट्रवाद पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण
अध्यक्षता	:	श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारत हिन्दू महासभा
विशिष्ट अतिथि	:	श्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारत हिन्दू महासभा

दिन व तिथि	:	सोमवार, 22 जनवरी 2018, बसंत पचंमी
समय	:	प्रातः 10:00 बजे से
प्रसाद व भोजन	:	दोपहर 01:30 बजे
स्थान	:	हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 (निकट बिड़ला मंदिर)

आपसे अनुरोध है कि इस राष्ट्रीय व धार्मिक कार्यक्रम में सपरिवार व मित्रों सहित समय से पधारने की कृपा करें।

निवेदक

सुनील कुमार, प्रदेश अध्यक्ष
वीरेश त्यागी, प्रदेश महामंत्री

अखिल भारत हिन्दू महासभा, दिल्ली प्रदेश
कार्यालय : हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली -110001
दूरभाष : 011-23365138, 23365354
Email : info@akhilbharathindumahasabha.org
akhilbharat_hindumahasabha@yahoo,com
Website : www.akhilbharathindumahasabha.org

कबिरा खड़ा बजार में

इंसानियत के बीच शीशे की दीवार क्यों

विश्व स्तर पर पाकिस्तान की चाहे जितनी भी थू–थू हो जाए पर पाक अपनी आदतों से बाज नहीं आ सकता। एक बार फिर विश्व की सामने उसकी ओछी मानसिकता जग जाहिर हुई है। पाकिस्तान की जेल में कैद भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव की आखिरकार अपनी मां व पत्नी से बात और मुलाकात हो ही गई। पाकिस्तान का आरोप है कि कुलभूषण जाधव भारतीय खुफिया एजेंसी रा का एजेंट है और पाकिस्तान में वह जासूसी तथा आतंकवाद का दोषी है। पाकिस्तान की सैन्य अदालत ने जाधव को फांसी की सजा सुनाई, लेकिन भारत इस मामले को अंतरराष्ट्रीय अदालत तक ले कर गया, जहां पाकिस्तान का पक्ष कमजोर साबित हुआ। वह जाधव को फांसी देने के पुख्ता कारण और सबूत दुनिया को नहीं दिखला पाया और इसलिए अंततराष्ट्रीय अदालत ने जाधव की फांसी पर अंतरिम रोक लगा दी। अंतरराष्ट्रीय अदालत में पाकिस्तान की दलीलें कमजोर पड़ने का एक बड़ा कारण यह था कि पाकिस्तान ने जाधव को कौंसुलर एक्सेस यानी राजनयिक पहुंच मुहैया नहीं करवाई, जबकि भारत बार–बार इसकी मांग करता रहा। अदालत ने इसे अंतरराष्ट्रीय समझौते का उल्लंघन माना। १९६३ के विएना समझौते के आर्टिकल ३६ के मुताबिक किसी विदेशी नागरिक की गिरतारी या हिरासत में लिए जाने पर उस देश के दूतावास को इस बारे में सूचित करना होता है, ताकि वह उस नागरिक से बातचीत कर सके और उसे बचाव का मौका मिल सके। पाकिस्तान अब तक यही कहता रहा कि जाधव कोई सामान्य विदेशी नागरिक नहीं है, बल्कि जासूस है, इसलिए उसे कौंसुलर एक्सेस नहीं दी जा सकती। कुलभूषण जाधव को अपनी बात उनसे कहने और उनसे कुछ सुनने का मौका नही दिया गया। अब पाकिस्तान भी स्वीकार कर रहा है कि उसने कौंसुलर एक्सेस नहीं दी। उनकी मां व पत्नी को भी उन्हें देखने दिया गया, लेकिन बीच में शीशे की दीवार थी। यानी वे एक–दूसरे को सांत्वना भरा स्पर्श भी नहीं दे सकते थे। उन्हें मराठी में बात करने से रोका गया और जितनी भी बातचीत हुई वह इंटरकाम के जरिए हुई। पाकिस्तानी अधिकारियों का कहना है कि यह सब सुरक्षा कारणों से किया गया। चूंकि इस वक्त महत्त्वपूर्ण यह था कि कुलभूषण जाधव को जिंदा और सकुशल देख लिया जाए, इसलिए भाारतीय पक्ष को बाकी सारी बातों को नजरंदाज करना पड़ा। वर्ना अतीत में सरबजीत जैसे कड़वे अनुभव भारत को हुए हैं, जहां फांसी से पहले ही जेल में अन्य कैदियों ने उन्हें पीट कर मार डाला। कुलभूषण जाधव को लेकर भी एक डर की तलवार हमेशा लटकी हुई है, गनीमत रही कि उन्हें एक बार अपनी मां और पत्नी से मिलने का मौका मिला। पाकिस्तान इसे आखिरी मुलाकात नहीं मान रहा है, यानी उम्मीद बंधी है कि आगे भी शायद और मुलाकातों के मौके मिलें। शीशे के उस पार खड़े जाधव की जो ताजा तस्वीरें आई हैं, उसमें उनके कान के पीछे चोट दिखाई दे रही है, जिससे अंदेशा है कि जेल में उनके साथ बदसलूकी होती है। वैसे पाकिस्तान ने इस मुलाकात के पीछे इस्लामिक परंपरा और इंसानियत का हवाला दिया है। लेकिन जानकारों का यह कहना है कि यह कदम उसने दुनिया के सामने अपनी उदार छवि बतलाने के लिए उठाया है। जाधव उसके लिए इस वक्त ट्रंप कार्ड की तरह है, जिसका इस्तेमाल वह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जरूरत पड़ने पर कर सकता है। पाकिस्तान ने जाधव मामले में एक कदम आगे बढ़ाकर बड़ी चतुराई से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि सुधारने की कोशिश की है। लेकिन मात्र एक मुलाकात से इंसाफ नहीं हो गया है। भारत को अब अगला कदम काफी सोच–समझकर उठाना होगा, ताकि जाधव मामले में उसका पक्ष मजबूत बना रहे। इंसानियत के बीच खड़ी शीशे की दीवार को हटाना ही वक्त की जरूरत है। **वीरेश त्यागी**

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 10 जनवरी से 16 जनवरी 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।